कार्यक्रम निदर्शिका

बी.ए. अर्थशास्त्र (विशेष)
(बी.ए.ई.सी.एच.)

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

इग्नू
जन-जन का विश्वविद्यालय

सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ
इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
मैदान गढ़ी, नई दिल्ली - 110068

अध्ययन विमर्श में हमारा मुख्य आसरा मुद्रित अध्ययन सामग्री ही है। हमारी यह अध्ययन सामग्री अध्येता हितों को ध्यान में रखते हुए एक विशेषज्ञ दल द्वारा तैयार की जाती है। प्रत्येक पाठ्यक्रम के लिए लब्ध प्रतिष्ठित विद्वान शिक्षकों और विशेषज्ञ संयावसायिकों का एक दल पाठ्यक्रम रचना से जुड़ा रहा है। अध्ययन सामग्री इस प्रकार लिखी गई है कि अध्ययन केंद्र में शैक्षिक परामर्शदाता से अधिक सहायता पाए बिना भी अध्येता स्वयं ही इसका अध्ययन कर सकता है। अतः, इग्नू के पाठ्यक्रमों के अध्येताओं को किन्हीं सस्ती कुन्जियों/पोथियों की ज़रूरत ही नहीं है। वस्तुतः उनसे तो अध्येता को कुछ न कुछ हानि ही होगी। विश्वविद्यालय अपने अध्येताओं से आग्रह करता है कि बाज़ार में उपलब्ध किसी प्रकार की ऐसी सस्ती कुंजियों का सहारा नहीं लें।

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

दिसंबर, 2019

© *इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, 2019*

सर्वाधिकार सुरक्षित हैं। इंदिरा गांधी मुक्त विश्वविद्यालय से लिखित अनुमति के बिना इस सामग्री के किसी भी अंश का अनुलिपित करना या अन्य किसी विधि से पुनः मुद्रण निषिद्ध है।

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रमों विषयक और जानकारी आप विश्वविद्यालय के मैदान गढ़ी, नई दिल्ली–110068 स्थित कार्यालय से प्राप्त कर सकते हैं।

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय की ओर से, निर्देशक, समाज विज्ञान विद्यापीठ द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित।

टेस्सा मीडिया एंड कंप्यूटर, सी-206, शाहीन बाग, जामिया नगर, नई दिल्ली–110025 द्वारा लेज़र टाइप सेट।

मुद्रित :

विषय सूची

भाग-1 : कार्यक्रम विवरण

1. विश्वविद्यालय
2. बी.ए. अर्थशास्त्र (विशेष)
   - 2.1 मूल पाठ्यक्रम
   - 2.2 ऐच्छिक पाठ्यक्रम
   - 2.3 योग्यता/कौशल संवर्धक पाठ्यक्रम
   - 2.4 निर्विशेष ऐच्छिक
3. अध्ययन नियोजन
4. शुल्क रचना एवं भुगतान कार्यक्रम
5. शिक्षण पद्धति
   - 5.1 अध्ययन सामग्री
   - 5.2 शैक्षिक परामर्श
   - 5.3 अध्ययन केंद्र
   - 5.4 निर्देशात्मक रेडियो परामर्श
   - 5.5 ज्ञान दर्शन
   - 5.6 ज्ञान वाणी
   - 5.7 टेलीकॉन्फ्रेंस/एडूसेट
6. मूल्यांकन
   - 6.1 सत्रीय कार्य
   - 6.2 सत्रांत परीक्षाएं
7. अन्य उपयोगी जानकारियाँ
8. कुछ उपयोगी पते

भाग-II पाठ्यक्रम रूपरेखा

1. मूल पाठ्यक्रम
2. विषय विशिष्ट ऐच्छिक
3. कौशल संवर्धक पाठ्यक्रम
4. निर्विशेष ऐच्छिक

ignou THE PEOPLE'S UNIVERSITY

प्रिय अध्येता

इग्नू एवं बी.ए. अर्थशास्त्र (विशेष) उपाधि कार्यक्रम में आपका स्वागत है। आप मुक्त एवं दूर शिक्षण विधि से शिक्षा प्रदान कर रहे विश्व के विशालतम विश्वविद्यालय से जुड़ गए हैं, अतः आपको इस विश्वविद्यालय एवं इसकी कार्य प्रणाली का ज्ञान होना ही चाहिए। आपको जो पाठ्यक्रम आपने चुन लिया है तथा विश्वविद्यालय की शिक्षण पद्धति के विषय में भी जानने की उत्सुकता अवश्य होगी। यह कार्यक्रम निदर्शिका आपको विश्वविद्यालय को जानने और अपना अध्ययन पाठ्यक्रम पूर्ण करने में सहायक होगी। **अतः हमारा परामर्श है कि अपना पाठ्यक्रम संपूर्ण करने तक इस निदर्शिका को अवश्य संभाल कर रखें।**

इस कार्यक्रम निदर्शिका का **भाग-1** को आपको कार्यक्रम का विवरण प्रदान करता है जिसमें विश्वविद्यालय, बी.ए.अर्थशास्त्र (विशेष) कार्यक्रम, अध्ययन नियोजन, शुल्क रचना एवं भुगतान कार्यक्रम, शिक्षण पद्धति और मूल्यांकन आदि की जानकारी दी गई है।

कार्यक्रम निदर्शिका के **भाग-II** में बी.ए.ई.सी.एच. के अंतर्गत प्रस्तुत सभी पाठ्यक्रमों के विवरण दिए गए हैं। यह आपको उन मूल, विषय विशिष्ट, निर्विशेष, योग्यता/कौशल संवर्धक पाठ्यक्रमों की विषय वस्तुओं का परिचय प्रदान करेगा जिनका आप अध्ययन करने जा रहे हैं।

कार्यक्रम संयोजक
बी.ए.ई.सी.एच.

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

भाग-I

पाठ्यक्रम विवरण

1. विश्वविद्यालय

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय विश्व का सबसे बड़ा विश्वविद्यालय है। यह संसद के 1985 में पारित एक अधिनियम के अंतर्गत स्थापित एक केंद्रीय विश्वविद्यालय है जिसका लक्ष्य सूचना संप्रेषण प्रौद्योगिकी सहित विविध विधाओं द्वारा शिक्षण एवं ज्ञान के प्रसार को बढ़ा देना है। इसका उद्देश्य जनसंख्या के एक विशाल समुदाय को उच्च शिक्षा के अवसर प्रदान करते हुए वृहत्तर समाज के शैक्षिक कुशाल क्षेम का संवर्धन करना है।

समाहनकारी शिक्षा के माध्यम से विश्वविद्यालय निरंतर एक ज्ञानाधारित समाज के निर्माण हेतु प्रयासरत है। यह मुक्त एवं दूर शिक्षा विधि से उच्च गुणवत्ता संपन्न शिक्षण के माध्यम से उच्च शिक्षा प्रदान कर रहा है।

अपेक्षाकृत छोटी अवधि में ही इग्नू ने उच्च शिक्षा, सामुदायिक शिक्षा, प्रसार विस्तार कार्यों और निरंतर संव्यावसायिक विकास कार्यों में एक महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। कनाडा के कॉमन वैल्थ ऑफ लर्निंग ने इसे दूर शिक्षा में विश्व का अग्रणी संस्थान मानते हुए 'उत्कृष्टता सम्मान' से विभूषित किया है।

इग्नू अपने शैक्षिक कार्यक्रमों का संचालन 21 विद्यापीठों तथा 67 क्षेत्रीय केंद्रों (भारतीय थल सेना, नौसेना तथा असम राइफल्स के लिए मानित 11 क्षेत्रीय केंद्रों सहित) और लगभग 3500 अध्ययन केंद्रों (SCs) के संजाल के माध्यम से करता है। विश्वविद्यालय के 12 विदेश स्थित अध्ययन केंद्र (OSCs) भी है।

इस समय विश्वविद्यालय अपनी विद्यापीठों के माध्यम से 200 से अधिक शैक्षिक, संव्यावसायिक, व्यावसायिक, जागरूकता-सृजन एवं कौशल उन्मुखी कार्यक्रमों का प्रमाण पत्र, डिप्लोमा, स्नातक उपाधि, स्नातकोत्तर उपाधि तथा विद्यावारिधि उपाधि स्तरों पर संचालन कर रहा है।

विभिन्न स्तरों पर शैक्षिक कार्यक्रमों और पाठ्यक्रमों की रचना एवं विकास करने वाली 21 विद्यापीठें ये हैं :

- कृषि विद्यापीठ (SOA)
- कंप्यूटर एवं सूचना विज्ञान विद्यापीठ (SOCIS)
- निरंतर शिक्षा विद्यापीठ (SOCE)
- शिक्षा विद्यापीठ (SOE)
- अभियांत्रिकी एवं प्रौद्योगिकी विद्यापीठ (SOET)
- विस्तार एवं विकास अध्ययन विद्यापीठ (SOEDS)
- विदेशी भाषा विद्यापीठ (SOFL)
- लिंग एवं विकास अध्ययन विद्यापीठ (SOGDS)
- स्वास्थ्य विज्ञान विद्यापीठ (SOHS)
- मानविकी विद्यापीठ (SOH)
- अन्तर्विषयी एवं पार-विषयी अध्ययन विद्यापीठ (SOITS)
- पत्रकारिता एवं नवमीडिया अध्ययन विद्यापीठ (SOJNMS)

- विधि विद्यापीठ (SOL)
- प्रबंध अध्ययन विद्यापीठ (SOMS)
- रंग एवं दृश्य कला विद्यापीठ (SOPVA)
- विज्ञान विद्यापीठ (SOS)
- समाज विज्ञान विद्यापीठ (SOSS)
- समाज कार्य विद्यापीठ (SOSW)
- पर्यटन एवं परिचर्या सेवा प्रबंधन विद्यापीठ (SOTHSM)
- अनुवाद अध्ययन एवं प्रशिक्षण विद्यापीठ (SOTST)
- व्यावसायिक शिक्षा एवं प्रशिक्षण विद्यापीठ (SOVET)

विश्वविद्यालय शिक्षण एवं स्व-अध्ययन के लिए विभिन्न माध्यमों और विधाओं से शिक्षण/अध्ययन सामग्री सुलभ कराता है। इस कार्य में प्रयुक्त स्व-शिक्षण मुद्रित एवं दृश्य-श्रव्य सामग्री, रेडियो एवं टेलीविज़न प्रसारण, प्रत्यक्ष मार्ग दर्शन/शिक्षण, प्रयोगशाला एवं व्यावहारिक कार्य, टेली कॉन्फ्रेंस, वीडियो-कॉन्फ्रेंस अंतर्क्रियात्मक बहु-विधायी सीडी-रोम तथा इंटरनेट आधारित अध्ययन शामिल रहते हैं। मोबाइल फोन के जरिये संदेश एवं ई-सामग्री प्रेषण भी किया जाता है।

वर्तमान में विश्वविद्यालय अंतर्क्रियात्मक बहु-विधाई ऑनलाइन अध्ययन सामग्री विकसित करने एवं परंपरागत दूर शिक्षा प्रदाय व्यवस्था को आधुनिक प्रौद्योगिकी का अनुप्रयोग करते हुए सम्मिश्रित अध्ययन तंत्र के विकास में संलग्न है। इस संदर्भ में कुछ नवीन प्रयास रहे हैं : SWAYAM आधारित विशाल मुक्त ऑनलाईन पाठ्यक्रम (MOOCs), शोध गंगा (UGCINFLIBNET प्रकल्प), 24x7 SWAYAMPRABHA, राष्ट्रीय डिज़ीटल पुस्तकालय (मानव संसाधन विकास मंत्रालय प्रकल्प), ई-ग्यानकोश और डिज़ीटल अध्ययन सामग्री हेतु IGNOU e-content App.

2. बी.ए.अर्थशास्त्र (विशेष)

जुलाई 2019 के सत्र से इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय ने विश्वविद्यालय अनुदान आयोग प्रणीत ''चयन आधारित श्रेयांक अंतरण'' (CBCS) पद्धति को अपना लिया है। यह पद्धति अध्येताओ को स्वयं चयन कर विभिन्न विषय पढ़ने की स्वतंत्रता प्रदान करती है और उन्हें देश के एक संस्थान से दूसरे में स्थानांतरण करने की सुविधा भी देती है। इस (CBCS) पद्धति के अंतर्गत दो कार्यक्रम हैं : बी.ए. (सामान्य) (BAG) तथा बी.ए. (विशेष) (BAH)। (BAG) कार्यक्रम तो जुलाई 2019 में ही प्रारंभ कर दिया गया था, हम (BAH) कार्यक्रम अब जनवरी 2020 से प्रारंभ कर रहे हैं।

वैसे तो चयन आधारित शैक्षिक कार्यक्रम प्रारंभ करने वाले अग्रणी विश्वविद्यालयों में इग्नू रहा है, अब CBCS के अंतर्गत सेमेस्टर पद्धति एवं 10 बिंदु श्रेणीकरण आधारित मूल्यांकन अपनाया जा रहा है। बी.ए. अर्थशास्त्र विशेष का कार्यक्रम कूट BAECH हैं। इस कार्यक्रम में 148 क्रेडिट या श्रेयांक हैं। विभिन्न प्रकार के पाठ्यक्रमों के बीच इन श्रेयांकों का विभाजन इस प्रकार है :

i) मूल पाठ्यक्रम (CCs) : 14 पाठ्यक्रम, 6 श्रेयांक प्रत्येक (84 श्रेयांक)

ii) विषय विशिष्ट ऐच्छिक (DSEs) : 4 पाठ्यक्रम, 6 श्रेयांक प्रत्येक (24 श्रेयांक)

iii) योग्यता संवर्धन अनिवार्य पाठ्यक्रम (AECCs) : 2 पाठ्यक्रम, 4 श्रेयांक प्रत्येक (8 श्रेयांक)

iv) कौशल संवर्धन पाठ्यक्रम (SECs) : 2 पाठ्यक्रम, 4 श्रेयांक प्रत्येक (8 श्रेयांक)

v) निर्विशेष ऐच्छिक (GEs) : 4 पाठ्यक्रम, 6 श्रेयांक प्रत्येक (24 श्रेयांक)

कार्यक्रम संपूर्ति की न्यूनतम अवधि 3 वर्ष (6 सेमेस्टर) है और अधिकतम अवधि 6 वर्ष है। एक श्रेयांक 30 घंटे के अध्ययन समय के तुल्य है– इस 30 घंटे की अवधि में पाठन, मुद्रित सामग्री को समझना श्रव्य सामग्री सुनना, दृश्य सामग्री देखना, परामर्श सत्र में उपस्थिति, टेली-कॉन्फ्रेंसिंग में भागीदारी और शैक्षिक कार्य लेखन शामिल हैं। इस कार्यक्रम के अधिकांश पाठ्यक्रम (CCs, DSEs और GEs) 6 श्रेयांक वाले हैं। इसका अर्थ है आपको इनमें से प्रत्येक पर 180 (6x30) घंटे का समय लगाना होगा। कार्यक्रम में 4 योग्यता एवं कौशल संवर्धक पाठ्यक्रम भी हैं जिनके लिए 120 (4x30) घंटे की अध्ययन अवधि आवश्यक होगी। तालिका 2.1 में कार्यक्रम संरचना की रूपरेखा दी गई है :

तालिका 2.1 : बी.ए. अर्थशास्त्र (विशेष) बी.ए.ई.सी.एच. की संरचना

सेमेस्टर	मूल पाठ्यक्रम	विषय विशिष्ट	योग्यता/कौशल संवर्धन	निर्विशेष	श्रेयांक
I	बीईसीसी-101 : प्रारंभिक व्यष्टि अर्थशास्त्र बीईसीसी-102 : अर्थशास्त्र हेतु गणितीय प्रविधियाँ-I	कोई नहीं	बीईवीएई-181 : पर्यावरणीय अध्ययन	बीएसओजी-171 : भारतीय समाज : बिंब और वास्तविकताएँ	22
II	बीईसीसी-103 : प्रारंभिक समष्टि अर्थशास्त्र बीईसीसी-104 : अर्थशास्त्र हेतु गणितीय प्रविधियाँ-II	कोई नहीं	**इनमें से एक*** बीईजीएई-182 : English Communication या बीएचडीएई-182 : हिंदी भाषा और संप्रेषण	बीपीएजी-172 : प्रशासन : मुद्दे एवं चुनौतियाँ	22
III	बीईसीसी-105 : मध्यवर्ती व्यष्टि अर्थशास्त्र-I बीईसीसी-106 : मध्यवर्ती समष्टि अर्थशास्त्र-I बीईसीसी-107 : अर्थशास्त्र हेतु सांख्यिकीय प्रविधियाँ	कोई नहीं	बीपीसीएस-185 : भावनात्मक क्षमता का विकास	बीपीएजी-173 : ई-प्रशासन	28
IV	बीईसीसी-108 : मध्यवर्ती व्यष्टि अर्थशास्त्र-II बीईसीसी-109 : मध्यवर्ती समष्टि अर्थशास्त्र	कोई नहीं	बीईसीएस- 184 : आंकड़ों का विश्लेषण	बीपीएजी-174 : धारणीय विकास	28

	बीईसीसी-110 : प्रारंभिक अर्थमिति				
V	बीईसीसी-111 : भारतीय अर्थव्यवस्था-I बीईसीसी-112 : विकास का अर्थशास्त्र-I	बीईसीई- 141 : स्वास्थ्य और शिक्षा का अर्थशास्त्र बीईसीई- 143 : पर्यावरणीय अर्थशास्त्र	कोई नहीं	कोई नहीं	24
VI	बीईसीसी-113 : भारतीय अर्थव्यवस्था-II बीईसीसी-114 : विकास का अर्थशास्त्र-II	बीईसीई- 142 : व्यवहारिक अर्थमिति बीईसीई- 144 : वित्तीय अर्थशास्त्र	कोई नहीं	कोई नहीं	24

*विषय का चयन अध्ययन के माध्यम पर निर्भर होगा।

2.1 मूल पाठ्यक्रम (CC)

इस कार्यक्रम में 14 मूल पाठ्यक्रम हैं। ये सभी विषय-विशिष्ट हैं और छहों सेमेस्टरों में विभाजित हैं। प्रत्येक मूल पाठ्यक्रम 6 श्रेयांकों का है। अतः कुल चौदह पाठ्यक्रमों में इनका योग 148 में से 84 श्रेयांक हो जाता है।

2.2 ऐच्छिक पाठ्यक्रम (DSEs)

ये विषय विशिष्ट ऐच्छिक पाठ्यक्रम 5वें और 6वें सेमेस्टर में उपलब्ध रहेंगे। ये भी 6 श्रेयांक प्रत्येक के हैं। ये DSEs विशिष्टीकरण के पाठ्यक्रम हैं और विषय के बारे में अधिक गहन एवं विस्तृत ज्ञान प्रदान करते हैं। इनका स्वरूप भी कुछ अनुप्रयोगात्मक रखा गया है ताकि मूल 'पाठ्यक्रमों' में अर्जित ज्ञान का स्वास्थ्य, पर्यावरण, वित्त आदि में व्यवहारिक प्रयोग सीखा जा सके। पूरे पाठ्यक्रम में 4 DSEs होंगे, तीसरे और चौथे सेमेस्टर में प्रत्येक में 2। इनका श्रेयांक भार 24 होगा (4x6)। उपयुक्त तालिका 2.1 में उपलब्ध DSEs दर्शाए हैं। इन DSEs को मिलाकर आप अर्थशास्त्र विषय के 18 पाठ्यक्रम पढ़ेंगे जिनका श्रेयांक मान 108 होगा। शेष पाठ्यक्रम अन्य विषयों से लिए गए हैं ताकि आप कुछ अंतर्विषयी संदर्शों से भी परिचित हो सकें। इन्हीं की रूपरेखा हम आगे बता रहे हैं।

2.3 योग्यता/कौशल संवर्धक पाठ्यक्रम

आप पहले और दूसरे सेमेस्टर में अर्थात् 3 वर्षीय कार्यक्रम के पहले ही वर्ष में दो योग्यता संवर्धक पाठ्यक्रमों (AECs) का अध्ययन करेंगे। ये आपके भाषा संप्रेषण कौशल को बढ़ाएंगे और आपको पर्यावरण का महत्त्व समझाएंगे। इसी प्रकार आप तीसरे और चौथे सेमेस्टर में एक-एक कौशल संवर्धक पाठ्यक्रमों (SECs) का अध्ययन करेंगे। तीसरे सेमेस्टर का पाठ्यक्रम आपकी भावनात्मक क्षमताओं का विकास करेगा तो चौथे सेमेस्टर का पाठ्यक्रम आपकी आंकलन क्षमता एंव कौशल का उन्नयन करेगा। इन पाठ्यक्रमों के शीर्षक भी उपर्युक्त तालिका 2.1 में दिए गए हैं।

2.4 निर्विशेष ऐच्छिक (GE)

ये GEs भी अंतर्विषक स्वरूप के हैं। ये अन्य विषय क्षेत्रों से लिए गए हैं और सामाजिक एवं शास्त्रीय घटनाक्रमों विषयक सूझ एवं दक्षता को पोषित करते हैं। इस समय उपलब्ध ये पाठ्यक्रम तालिका 2.1 में दर्शाए गए हैं। विश्वविद्यालय आगे चलकर नए GE पाठ्यक्रम भी सुलभ करा सकता है। उन नए पाठ्यक्रमों की सूचना विश्वविद्यालय की वेबसाइट पर आ जाएगी। आप उन पाठ्यक्रमों को दूसरे या तीसरे वर्ष के लिए पुनः पंजीकरण कराते समय चुन सकते हैं।

अब BAECH कार्यक्रम की रचना समझकर आप इस विषय पर केंद्रित हो सकते हैं कि अपने अध्ययन की योजना कैसे बनाएं।

3 अध्ययन नियोजन

इस कार्यक्रम को संपूर्ण करने में समय अवधि को लेकर नम्यता सुलभ है। आप इस नम्यता का पूरा लाभ उठा सकते हैं। कुछ थोड़ा ध्यान देकर योजना बनाएं और अध्ययन करें तो आप 148 श्रेयांक अर्जित करते हुए तीन वर्ष में ही कार्यक्रम पूरा करने का लक्ष्य प्राप्त कर सकते हैं। यदि किसी कारण से आप तीन वर्ष में यह कार्यक्रम पूरा नहीं कर पाते हैं तो भी ध्यान रहे, आपका पंजीकरण 6 वर्षों तक वैध रहेगा। आप पुनः प्रवेश के लिए आवेदन कर दो वर्ष का अतिरिक्त समय भी प्राप्त कर सकते हैं।

जैसे पहले भी बताया गया है, इस कार्यक्रम का प्रत्येक श्रेयांक अध्येता द्वारा अध्ययन कार्य पर 30 घंटे का समय लगाए जाने के समतुल्य है (अर्थात् आपको अध्ययन सामग्री पढ़ने, समझने, श्रव्य-दृश्य कार्यक्रम देखने-सुनने, परामर्श सत्रों में उपस्थित रहने, टेलीकॉन्फ्रेंसिंग और लिखित सत्रीय कार्य करने पर इतना समय लगाना होगा)। इसका अर्थ है कि प्रत्येक पाठ्यक्रम के लिए आपके 180 घंटे का समय 6 श्रेयांकों और 120 घंटे का समय 4 श्रेयांकों वाले पाठ्यक्रम पर लगाने की अपेक्षा है। कुल-मिलाकर आपको वर्ष भर में अपने अध्ययन कार्य के लिए 1480 घंटे निकालने होंगे। इसका अर्थ है कि 300 दिन 5 घंटे प्रतिदिन का समय अध्ययन हेतु समर्पित करना होगा। इस कार्यभार को ध्यान में रखते हुए आपको अपनी अध्ययन समय-सारिणी निर्धारित करनी होगी। ऐसा करने पर आप 3 वर्ष की न्यूनतम नियत अवधि में यह कार्यक्रम संपूर्ण कर पाएंगे। प्रत्येक सेमेस्टर में पाठ्यक्रम संख्या समान नहीं है (द्वितीय वर्ष में आपको प्रथम एवं तृतीय की अपेक्षा प्रति सेमेस्टर अधिक पाठ्यक्रम पूर्ण करने हैं) अतः 3 वर्ष की नियत अवधि में ही इस कार्यक्रम को संपूर्ण करने के लिए कुछ योजनाबद्ध काम तो आपको करना होगा। पूरे वर्ष नियमित काम करना उपयोगी रहता है। अध्ययन कार्य को परीक्षा के मुहाने तक स्थापित रखना आप के लिए ही बोझिल हो जाएगा और संभवतः आप उससे अभिभूत होकर रह जाएंगे।

यदि आप पूरी तरह से इस अध्ययन कार्यक्रम के प्रति समर्पित नहीं हो पाएं तो आपको सेमेस्टर एवं वर्षानुसार अपने लक्ष्य निर्धारित कर लेने चाहिए। यदि आपको लगता है कि आप वर्ष में 30 श्रेयांकों जितना समय ही दे पाएंगें तो वर्ष के आरंभ से ही योजनापूर्वक कार्य करें। चुनिंदा पाठ्यक्रमों का ही अध्ययन करें। उन्हीं पाठ्यक्रमों के सत्रीय कार्य करें जिनकी परीक्षा (TEE) आप उस वर्ष देना चाहते हैं और शेष अगले वर्ष के लिए छोड़ दें। अगले वर्ष फिर से दोनों सेमेस्टरों के लिए अपने लक्ष्य निर्धारित कर लें। जब भी आप पहले बकाया पाठ्यक्रमों की परीक्षा देने का विचार बनाएं, उसी समय के लिए नियत सत्रीय कार्य (Assignments) आप तैयार कर जमा कराएं। हमेशा सत्रीय कार्य जमा करते समय परीक्षा हेतु अभ्यर्थता विषयक

प्रावधानों का ध्यान रखें (विवरण इसी निर्देशिका के भाग 6.1 में है)। आप अपने लिए उपयुक्त योजना बनाकर अध्ययन करें तो सुविधापूर्वक इस कार्यक्रम को संपूर्ण कर पाएंगे।

4. शुल्क रचना एवं भुगतान

शुल्क रचना : बीएईसीएच कार्यक्रम के लिए रु.3200/– प्रतिवर्ष की दर से रु.9600/– की शुल्क राशि देय है। प्रथम वर्ष में शुल्क के रु.3200/– के साथ ही रु.200/– का पंजीकरण शुल्क भी देय होगा अर्थात् पहले वर्ष कुल रु.3400/– देय होंगे। कार्यक्रम शुल्क का भुगतान आपको ऑनलाइन ही करना है और इसके लिए डेबिट या क्रेडिट कार्ड का प्रयोग करना चाहिए। एक बार जमा किया गया शुल्क आपको वापस नहीं मिल पाएगा।

विश्वविद्यालय कार्यक्रम शुल्क संशोधित कर सकता है। उस दशा में आपको भी विश्वविद्यालय द्वारा अधिसूचित संशोधित शुल्क देना होगा।

यद्यपि बी.ए.ई.सी.एच. सेमेस्टर पद्धति में संचालित होता है– किंतु पंजीकरण वार्षिक आधार पर ही किया जाएगा। जिस प्रकार आप प्रारंभ में पहले एवं दूसरे सेमेस्टर के लिए पंजीकरण कराते हैं, उसी प्रकार दूसरे वर्ष के प्रारंभ में तीसरे-चौथे सेमेस्टर तथा तीसरे वर्ष के प्रारंभ में पाँचवें एवं छठे सेमेस्टर के लिए पंजीकरण कराएंगे। इसकी समय-सारिणी आगे दी जा रही है।

पुनः पंजीकरण की समय-सारिणी

अध्येताओं को सलाह दी जाती है कि समय-समय पर विश्वविद्यालय की वेबसाइट पर घोषित समय-सारिणी के अनुसार WWW.ignou.ac.in पोर्टल पर ही ऑन लाइन अपने पुनः पंजीकरण आवेदन पत्र भरें।

कार्यक्रम शुल्क वर्ष के प्रारंभ में ही ऑन-लाइन विधि से डेबिट या क्रेडिट कार्ड के माध्यम से ही भरा जाएगा।

समय पर कार्यक्रम शुल्क जमा करना अध्येता का दायित्व है। अपेक्षा की जाती है कि अध्येता अंतिम तिथि की प्रतीक्षा किए बिना जल्दी से जल्दी शुल्क जमा कर देंगे। शुल्क नहीं भरने पर अध्ययन सामग्री पाने और परीक्षा देने से रोकने के काम भी हो सकते हैं। प्रवेश भी निरस्त हो सकता है। यदि कोई अध्येता विधिवत् पंजीकरण के बिना ही जान-बूझकर परीक्षा देने का प्रयास करेगा तो उसके विरुद्ध विश्वविद्यालय के नियमानुसार कार्रवाई हो सकती है।

5 प्रशिक्षण पद्धति

विश्वविद्यालय द्वारा अपनाई गई प्रशिक्षण पद्धति परंपरागत विश्वविद्यालयों से भिन्न है। मुक्त विश्वविद्यालय व्यवस्था अधिक अध्येता मित्र होती है और यहाँ अध्येता शिक्षण-अध्ययन प्रक्रिया में एक सक्रिय सहभागी होता है। अधिकांश प्रशिक्षण दूर-शिक्षण विधि से होता है – प्रत्यक्ष विधि से आमने-सामने बैठकर नहीं।

विश्वविद्यालय ने प्रशिक्षण के लिए एक बहु-विधाई दृष्टिकोण अपनाया है। इसमें शामिल हैं–

- स्व-अध्ययन सामग्री
- रेडिया और टेलीविज़न पर प्रसारित श्रव्य-दृश्य कार्यक्रम

- टेलीकॉन्फ्रेंसिंग सत्र
- अध्ययन केंद्रों पर शैक्षिक परामर्शदाताओं के साथ प्रत्यक्ष परामर्श सत्र
- सत्रीय कार्य/ट्यूटोरियल/व्यवहारिक कार्य/शोध निबंध/प्रकल्प प्रबंध

5.1 पाठ्यक्रम सामग्री

प्रशिक्षण का प्राथमिक स्वरूप मुद्रित या ई-पुस्तक स्वरूपी अध्ययन सामग्री है। आपको विश्वविद्यालय द्वारा प्रेषित मुद्रित या ई-पुस्तकों पर भी केंद्रित रहना चाहिए। यह सामग्री आपके सत्रीय कार्य करने और सत्रांत परीक्षाओं की तैयारी करने के लिए पर्याप्त होगी। फिर भी हम सलाह देंगे कि प्रत्येक अध्ययन सामग्री के अंत में सुझाए गए संदर्भों को भी यथासंभव पढ़ने का प्रयास अवश्य करें।

विश्वविद्यालय द्वारा तैयार की गई सामग्री का स्वरूप स्व-अध्ययन वाला है। प्रत्येक पाठ्यक्रम का मुद्रण एक पुस्तक/ई-पुस्तक के रूप में किया गया है। पाठ्यक्रम में कई खंड होते हैं और प्रत्येक खंड में कुछ इकाइयाँ इस प्रकार निबद्ध होती हैं कि उनमें विषय-वस्तु का तारतम्य बना रहे। उक्त पुस्तक का पाठ्यक्रम परिचय अंश पूरे पाठ्यक्रम पर एक विहंगम दृष्टि के साथ-साथ उसके उद्देश्य और उसके पाठन हेतु निर्देश भी प्रदान करता है। साथ ही, प्रत्येक इकाई में भी एक परिचयात्मक अनुच्छेद होता है।

प्रत्येक इकाई में विषय प्रवेश से पूर्व उसके उद्देश्य दिए गए हैं। इनसे आप जान सकते हैं कि इकाई में आप क्या सीख पाएंगे। विषय प्रवेश पूरी इकाई की विषय वस्तु का एक विहंगम चित्रण है। प्रायः अगली इकाइयों का पिछली इकाइयों के विषय से कुछ तारतम्य अवश्य रहता है। इकाई का मुख्य पाठ भी अनेक भागों और उपभागों में विभाजित होगा। एक-दो भागों के बाद बोध प्रश्न मालाएं दी गई हैं। आपको उन्हें हल करने का प्रयास अवश्य करना चाहिए। यह आपको स्व-आंकलन करने का अवसर प्रदान करेगा कि आप कहां तक विषय के उस अंश को समझ पाएं हैं। अपने उत्तरों की इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों/संकेतों से तुलना कर सकते हैं। ध्यान रहे कि बोध प्रश्न मालाएं आपके स्व-आंकलन के लिए ही हैं। इनके उत्तर सत्रीय कार्य के रूप में विश्वविद्यालय को नहीं भेजें। इकाई के अंत में दिए गए विस्तृत संकेत पूर्ण उत्तर नहीं हैं – वे संकेत ही हैं। इनका उद्देश्ये आपको अपनी भाषा में उत्तर लिखने के लिए प्रोत्साहित करना ही है।

'सार संक्षेप' का अनुच्छेद प्रत्येक इकाई में है। यह उस इकाई में चर्चित सामग्री का एक अति संक्षिप्त चित्रण है। यह आपको इकाई में चर्चित मुख्य बातों को पुनःस्मरण करने में सहायक है। प्रत्येक इकाई के अंत में संदर्भ सूची भी है। ये आगे अध्ययन हेतु सुझाए गए पाठांश आदि हो सकते हैं या ऐसे लेख जिनका इकाई की रचना के लिए प्रयोग किया गया है।

स्व-अध्ययन सामग्री को ठीक से समझने के लिए ये ज़रूरी है कि आप इकाई को ध्यानपूर्वक पढ़ें। मुद्रित सामग्री में छोड़े गए हाशियों पर आप अपनी टिप्पणियाँ लिख रखे। यदि कोई कठिन शब्द आए तो उपयुक्त शब्दकोश का सहारा लें– फिर भी समझ नहीं आने पर अपने अध्ययन केंद्र के परामर्शदाता से उस पर चर्चा कर स्पष्टीकरण अवश्य प्राप्त करें।

अध्ययन सामग्री प्रेषण

पंजीकरण की ऑनलाइन प्रक्रिया पूर्ण होने पर अध्ययन सामग्री भेजने का कार्य प्रारंभ कर दिया जाता है। पंजीकरण प्रक्रिया बंद होने के एक मास में आप सामग्री प्राप्त करने की आशा कर सकते हैं। यदि आपको पूरी सामग्री नहीं मिले या गलत पाठ्यक्रम की सामग्री आ जाए जो आप क्षेत्रीय केंद्र से बात करें या विश्वविद्यालय के शिक्षार्थी सेवा केंद्र से ssc@ignou.ac.in पर संपर्क करें।

5.2 शैक्षिक परामर्श

दूर शिक्षा में (भी) अध्येता और शैक्षिक परामर्शदाताओं के बीच आमने-सामने का संपर्क एक महत्त्वपूर्ण कार्य है। इस कार्य का उद्देश्य आपके कुछ प्रश्नों के उत्तर पाना, कुछ संदेह दूर करना है – ये सब किसी अन्य प्रकार के संप्रेषण से नहीं हो पाता। यह आपको अन्य अध्येताओं से मिलने का अवसर भी प्रदान करता है।

अध्ययन केंद्रों पर आपके पाठ्यक्रमों में आपका मार्ग-दर्शन करने के लिए अनुभवी परामर्शदाता उपस्थित होते हैं। सारे शैक्षिक सत्र में समय-समय पर प्रत्येक पाठ्यक्रम के लिए परामर्श/मार्ग-दर्शन सत्रों का आयोजन किया जाता है। यद्यपि सैद्धांतिक पाठ्यक्रमों के परामर्श सत्रों में उपस्थिति अनिवार्य नहीं है – फिर भी हम यही सुझाव देते हैं कि इनमें भाग लेना कई तरह से आपके लिए उपयोगी रहेगा। आप यहां अपने विचार अन्य अध्येताओं एवं शिक्षकों के साथ सांझा कर सकते हैं। कतिपय जटिल प्रश्नों एवं समस्याओं/शंकाओं का समाधन पा सकते हैं – जो शायद आप कहीं और नहीं पूछ पाएंगे। किंतु जहाँ भी व्यवहारिक या प्रयोगशाला कार्य हैं, वहां तो उपस्थिति अनिवार्य होती है।

आपके नियत अध्ययन केंद्र पर आपको प्रत्यक्ष परामर्श प्रदान किया जाएगा। किंतु ध्यान रहें कि ये सत्र सामान्य कक्षाओं या आख्यानों से अलग होते हैं। परामर्शदाता प्रायः आपको भाषण नहीं देंगे, वे तो इस कार्यक्रम के अंतर्गत आपको आ रही कठिनाइयां सुलझाने का काम करेंगे। इन सत्रों में आप अपनी विषय आधारित समस्याएँ उठाइए। विश्वविद्यालय प्रायः एक 4 श्रेयांक पाठ्यक्रम के लिए 6 से 7 तथा 6 श्रेयांक पाठ्यक्रम के लिए 9 से 10 परामर्श सत्र आयोजित करता है। यदि किसी कार्यक्रम में किसी अध्ययन केंद्र में 10 से कम अध्येता हों तो वहां गहन मार्ग-दर्शन हेतु 40 प्रतिशत परामर्श सत्रों का ही आयोजन होगा। वह भी एक सप्ताह में।

मार्गदर्शन सत्र में जाने से पूर्व आपको अपनी अध्ययन सामग्री पढ़कर और पूछने योग्य बातें नोट करके जाना चाहिए। यदि आप इकाइयाँ पढ़ेंगे नहीं तो कुछ पूछ भी नहीं पाएंगे। संबद्ध एवं महत्त्वपूर्ण प्रश्नों पर केंद्रित रहने का प्रयास करें। अन्य अध्येताओं से संपर्क आपको परस्पर अध्ययन कार्य में सहायक हो सकता है। अपने मार्गदर्शक शिक्षकों से अधिक से अधिक सहायता पाने का प्रयास करें।

5.3 अध्ययन केंद्र

प्रभावी अध्येता सहायतार्थ देश में अनेक अध्ययन केंद्र गठित किए गए हैं। आपके निवास या कार्यस्थल का ध्यान रखते हुए आपको किसी एक केंद्र के साथ जोड़ा जाएगा। किंतु हमारे सभी प्रयासों के बावजूद प्रत्येक अध्यापन केंद्र अध्येताओं की सीमित संख्या का ही ध्यान रख पाता है। अतः सदैव यह संभव नहीं होता कि आपको अपनी पसंद का केंद्र मिल पाए। आपके लिए नियत केंद्र की जानकारी आपको प्रेषित की जाएगी।

प्रत्येक अध्ययन केंद्र में होंगे :

- केंद्र की सभी गतिविधियों का संयोजन करने वाले संयोजक,
- सहायक-संयोजक एवं अन्य सहायक स्टॉफ
- शैक्षिक परामर्शदाता जो आपको आपके पाठ्यक्रमों के अध्ययन में मार्गदर्शन देंगे।

अध्ययन केंद्र के 4 मुख्य कार्य होंगे :

परामर्श : अध्ययन केंद्र पर आपको प्रत्यक्ष रूप से परामर्श और मार्गदर्शन प्राप्त होगा। जैसे कि पहले बताया गया है, एक 6 श्रेयांक के पाठ्यक्रम के लिए 9 से 10 तथा 4 श्रेयांक पाठ्यक्रम के लिए 6 से 7 परामर्श सत्र होंगे।

अध्ययन केंद्र के संयोजक उन सत्रों की जानकारी आपको प्रेषित करेंगे।

आपका अध्ययन केंद्र आपका संपर्क बिंदु भी है। विश्वविद्यालय सभी अध्येताओं को अलग से सूचनाएँ नहीं भेज सकता। सारी महत्त्वपूर्ण जानकारियाँ अध्ययन केंद्र संयोजकों और क्षेत्रीय निर्देशकों के माध्यम से प्रेषित होती हैं। केंद्र संयोजन इग्नू अध्येताओं के लाभार्थ सभी महत्त्वपूर्ण प्रपत्र आदि सूचना पट्ट पर लगाएंगे। अतः आपको सलाह दी जाती है कि शैक्षिक कार्यों, परीक्षा आवेदन भरने, सत्रांत परीक्षा की तिथिवार सारिणी, परिणामों की घोषणा आदि के विषय में अपने अध्ययन केंद्र से नियमित संपर्क बनाए रखें।

सत्रीय कार्य का मूल्यांकन

शिक्षक मूल्यांकन सत्रीय कार्य (TMA) का मूल्यांकन संबद्ध अध्ययन केंद्रों में नियुक्त परामर्शदाता करेंगे। शिक्षकों की टिप्पणियों और प्राप्त अंकों के साथ ये आपको लौटाए जाएंगे। ये टिप्पणियाँ आपको यह समझाएगी कि आप अपने पढ़ने के काम को किस प्रकार और बेहतर बना सकते हैं।

सूचना और सलाह

अध्ययन केंद्र पर आपको विश्वविद्यालय में उपलब्ध पाठ्यक्रमों/कार्यक्रमों, शैक्षिक समय सारिणी, परीक्षा समय सारिणी आदि की जानकारी मिलेगी। आपको ऐच्छिक एवं अनुप्रयोगोन्मुखी पाठ्यक्रम चुनने में मार्गदर्शन भी मिलेगा।

सह-अध्येताओं से परस्पर संबंध

अध्ययन केंद्रों में आपको अपने सह-अध्येताओं के साथ संपर्क का अवसर भी मिलता है।

5.4 अनुक्रियात्मक रेडियो परामर्श सत्र

आकाशवाणी के तंत्र के माध्यम से विश्वविद्यालय ने अनुक्रियात्मक परामर्श मार्गदर्शन की व्यवस्था की है। आप अपने क्षेत्र के रेडियो स्टेशन पर ये प्रसारण सुनते हुए इनमें भागीदारी कर सकते है। विभिन्न विशेषज्ञ इन प्रसारणों में भाग लेते हैं। अध्येता फोन पर उनसे अपने प्रश्न कर सकते हैं – रेडियो केंद्र उपयुक्त फोन नंबरों की भी घोषणा करते हैं। ये मार्गदर्शन प्रतिदिन सुलभ है। विश्वविद्यालय की वेबसाइट पर 'ज्ञानवाणी' भाग में इन अनुक्रियात्मक रेडियो प्रसारणों की समय-सारिणी सुलभ है।

5.5 ज्ञान दर्शन

इग्नू ने दूरदर्शन के सहयोग से एक विशुद्ध रूप से शिक्षा को समर्पित टेलीविज़न चैनल ज्ञानदर्शन शुरू किया है। यह प्रतिदिन 24 घंटे शैक्षिक कार्यक्रम प्रसारित करता है। रोज़ अपराह्न 3 से 5 बजे तक नए कार्यक्रम 'लाईव' प्रसारित होते हैं जिनका उसी दिन रात 8 से 10 बजे के बीच पुनः प्रसारण भी हाता है। इस चैनल पर इग्नू ही नहीं अन्य राष्ट्रीय शिक्षा संस्थानों द्वारा निर्मित कार्यक्रम भी दिखाए जाते हैं। अपने केबल टीवी सेवा प्रदाता से आप इस चैनल को प्राप्त कर इसे देखने का प्रयास करें। आपके अध्ययन केंद्र पर एक महीने पहले से ही इन कार्यक्रमों की विषय एवं समय-सारिणी उपलब्ध हो जाती है। आप विश्वविद्यालय की वेबसाइट से भी पूर्ण निर्मित एवं लाइव कार्यक्रमों के प्रसारण समय की जानकारी पा सकते हैं।

5.6 ज्ञानवाणी

एक शैक्षिक एफ.एम. रेडियो चैनल ज्ञानवाणी है जिस पर प्राथमिक, माध्यमिक, प्रौढ़, तकनीकी एवं व्यवसायिक उच्चतर एवं विस्तार शिक्षा स्तर के कार्यक्रम आदि प्रसारित होते हैं। इस पर इग्नू के स्नातक उपाधि स्तर (सामान्य एवं विशेष) के विभिन्न पाठ्यक्रमों और उनके आयामों पर भी कार्यक्रम सुनाए जाएंगे। इनकी समय-सारिणी विश्वविद्यालय की वेबसाइट पर सुलभ होगी।

5.7 टेली-कॉन्फ्रेंसिंग/एडूसैट

हम देश के विभिन्न भागों में रह रहे अध्येताओं तक पहुँचने के लिए टेली-कॉन्फ्रेंसिंग का सहारा भी लेते हैं। ये सभी सत्र दिल्ली से संचालित होते हैं। अध्येता इग्नू के क्षेत्रीय केंद्रों पर जाकर इनमें शामिल हो सकते हैं। इसमें एकदिश दृश्य एवं द्विदिश श्रव्य संप्रेषण होता है। ये सत्र ज्ञान दर्शन-2 तथा एडूसैट पर भी उपलब्ध होते हैं। सभी सप्ताह दिवसों पर सायं 5 से 7:45 का समय बी.ए.स्तर के कार्यक्रमों के लिए नियत है। इन सत्रों में दिल्ली स्थित इग्नू संकाय सदस्य एवं अन्य विशेष उपस्थित होते हैं। आप अपने प्रश्न इन विशेषज्ञों तक संप्रेषण प्राप्ति केंद्रों में उपलब्ध दूरभाष से पहुँचा कर उनके उत्तर पा सकते हैं। इनसे आपको शंकाओं का समाधान तथा कार्यक्रम विषयक अन्य सामान्य जानकारियाँ पाने में सहायता मिलेगी।

6 मूल्यांकन

इग्नू की मूल्यांकन पद्धति भी परंपरागत विश्वविद्यालयों से अलग है। यहाँ मूल्यांकन बहुस्तरीय होता है।

- अध्ययन सामग्री की प्रत्येक इकाई में स्व-मूल्यांकन अभ्यास प्रश्नावलियाँ होती हैं।
- शिक्षा मूल्यांकित सत्रीय कार्य, व्यवहारिक सत्रीय कार्य/कार्यशालाएँ विस्तारित संपर्क कार्यक्रम (पाठ्यक्रम के स्वरूपानुसार) निरंतर मूल्यांकन पद्धति के अंग हैं।
- सत्रांत परीक्षा
- प्रकल्प/व्यावहारिक कार्य (पाठ्यक्रम की जरूरतों के अनुसार)।

सत्रीय कार्यों द्वारा निरंतर मूल्यांकन और सत्रांत परीक्षाओं के भारमान 30:70 है। इसका अर्थ है कि आपके अंतिम परीक्षा फल में सत्रीय कार्यों का अंश 30% तथा सत्रांत परीक्षा का अंश 70% होगा। अब विश्वविद्यालय निरंतर एवं सत्रांत मूल्यांकन के लिए क्रम निर्धारण (grading)

विधि का अनुसरण करती है। यह क्रम निर्धारण निम्न रूप से अक्षरों द्वारा दर्शाया जाता है। इस तालिका में अक्षरों के अंक तुल्य मान और प्रतिशतांक सीमाएँ भी दिखाई जा रही हैं।

अक्षर क्रम	तुल्य अंक मान	प्रतिशत
'O' सर्वोत्कृष्ट	10	≥ 85
A^+ उत्कृष्ट	9	$\geq 75 < 85$
A बहुत अच्छा	8	$\geq 65 < 75$
B^+ अच्छा	7	$\geq 55 < 65$
B औसत से बेहतर	6	$\geq 50 < 55$
C औसत	5	$\geq 40 < 50$
D सफल	4	$\geq 35 < 40$
F असफल	0	< 35
Ab अनुपस्थित	0	अनुपस्थित

आपके स्नातक कार्ड में अंकीय मान भी दर्शाए जाते हैं ताकि कार्यक्रम में आपके वर्ग (Division) बताए जा सकें। आपको निरंतर मूल्यांकन के सत्रीय कार्यों और सत्रांत परीक्षा, दोनों में पृथक्-पृथक् रूप से न्यूनतम 35% अंक पाना आवश्यक है। कुल-मिलाकर आंकलन में भी प्रत्येक पाठ्यक्रम में न्यूनतम 35% (ग्रेड D) पाने पर ही आप स्नातक उपाधि पाने के पात्र होंगे।

जो अध्येता किसी सत्रांत परीक्षा में सफल नहीं हो पाते वे अगले वर्ष पुनः परीक्षा दे सकते हैं – अर्थात् आप अपने प्रथम वर्ष की सत्रांत परीक्षा अपने द्वितीय अध्ययन वर्ष में भी दे सकते हैं। किंतु किसी एक सत्रांत परीक्षा में आप 48 से अधिक श्रेयांकों के लिए परीक्षाएं नहीं दे सकते। इसी प्रकार द्वितीय वर्ष के बकाया पाठ्यक्रमों की परीक्षा तृतीय वर्ष की सत्रांत परीक्षा के साथ दी जा सकती है।

6.1 सत्रीय शैक्षिक कार्य

ये सत्रीय कार्य आपके निरंतर मूल्यांकन के अंग है। **इनमें प्राप्त अंक आपके अंतिम परीक्षाफल में सम्मिलित होंगे।** जैसा कि पहले बताया गया है प्रत्येक पाठ्यक्रम के सत्रीय कार्य का भारमान 30% होता है। अपने इन सत्रीय कार्यों को गंभीरतापूर्वक करें। आपकी एक साधारण सी त्रुटि आगे चलकर गंभीर रूप धारण कर सकती है।

इस कार्यक्रम के प्रत्येक पाठ्यक्रम के लिए आपको तीन शिक्षक मूल्यांकित सत्रीय कार्य करने होंगे (यह पाठ्यक्रम के स्वरूप पर निर्भर होंगे)। प्रत्येक सेमेस्टर के लिए सत्रीय कार्य प्रश्न पत्र आप विश्वविद्यालय की वेबसाइट की student zone से प्राप्त कर सकते हैं।

सत्रीय कार्य पुस्तिका में बताई गई समय सीमा में ही आपको उस कार्य को पूरा करना होगा।

यदि आप निश्चित समय सीमा में किसी पाठ्यक्रम के सत्रीय कार्य पूर्ण कर जमा नहीं कराते हैं तो आपको उसकी सत्रांत परीक्षा देने की अनुमति नहीं मिलेगी। यदि बिना सत्रीय कार्य जमा किए आप किसी सत्रांत परीक्षा में बैठ जाते हैं तो आपका परीक्षाफल निरस्त किया जा सकता है।

सुनिश्चित करें कि आपका सत्रीय कार्य सभी प्रकार से संपूर्ण हो। जमा कराने से पूर्व जांच कर लें कि आपने सभी भागों/अंशों से सभी प्रश्नों के उत्तर यथा निर्देश लिख लिये हैं। अपूर्णता आपके प्राप्त अंकों को दुष्प्रभावित कर सकती है।

इन शिक्षक मूल्यांकित सत्रीय कार्यों का मुख्य उद्देश्य यह जांचना है कि आप अध्ययन सामग्री कहां तक समझ पाए हैं। साथ ही ये आपको पाठ्यक्रम पूरा कर पाने में भी सहायक रहते हैं। शिक्षक या परामर्शदाता इनकी जाँच के बाद अपनी टिप्पणियों के साथ इन्हें आपको लौटा देते हैं। ये टिप्पणियाँ आपको अपनी पाठ्यक्रम की समझ का उन्नयन करने में सहायक होंगी। अतः यह महत्त्वपूर्ण है कि आप टिप्पणियों सहित अपनी जाँची हुई सत्रीय कार्य पुस्तिकाएं अध्ययन केंद्र से वापस अवश्य ले लें।

मुद्रित अध्ययन सामग्री सत्रीय कार्यों हेतु पर्याप्त होती है। अन्य अतिरिक्त सामग्री की असुलभता को लेकर परेशान नहीं हों। किंतु यदि अन्य पुस्तकें भी आपको मिल जाएं तो उनकी सामग्री भी आप स्तरीय कार्य करते समय प्रयोग कर सकते हैं। सत्रीय कार्य प्रश्न इस प्रकार बनाए जाते हैं कि आप मुख्यतः अध्ययन सामग्री पर केंद्रित रहते हुए अपने अन्य अनुभवों का भी प्रयोग कर सकें।

आपको अपने 'सत्रीय कार्य' अपने अध्ययन केंद्र के संयोजक के पास जमा कराने हैं। अपने पास उन कागज़ों की एक प्रति रखना भी अच्छा रहेगा। यदि आपको जमा कराने के एक महीने के भीतर अपने मूल्यांकित सत्रीय कार्य पत्रक वापस नहीं मिले तो व्यक्तिगत रूप से अध्ययन केंद्र से संपर्क करना उचित होगा। **उन सत्रीय कार्यों की प्रतिलिपि अपने पास अवश्य सुरक्षित रखें।** हो सकता है कि विश्वविद्यालय का छात्र-मूल्यांकन प्रभाग (SED) कभी आपसे उनकी माँग कर ले। मूल्यांकन के बाद वापस मिले सत्रीय कार्य पत्रकों का हिसाब भी रखें। कोई समस्या उठने पर यह विश्वविद्यालय के समक्ष अपना पक्ष रखने में सहायक होगा।

यदि आपको किसी सत्रीय कार्य में 'पास' अंक नहीं मिलें तो आपको वह दुबारा करना होगा। उसके लिए आपको विश्वविद्यालय की वेबसाइट के Student Zone से नवीनतम सत्रीय कार्य प्रश्न-पत्र प्राप्त कर उन्हें हल करना होगा। किंतु यदि आपको किसी सत्रीय कार्य में 'पास' अंक मिल चुके हैं तो आप अपने अंकों को सुधारने के लिए दुबारा सत्रीय कार्य नहीं कर पाएंगे। सत्रीय कार्यों का पुनर्मूल्यांकन नहीं होता– हाँ, मूल्यांकनकर्ता द्वारा किसी तथ्यात्मक त्रुटि के रहने पर उसको सुधारा जा सकता है। आपको यदि ऐसी कोई त्रुटि दिखाई पड़ जाए तो तुरंत अपने अध्ययन केंद्र संयोजक को सूचित करें ताकि वह मुख्यालय के SED को आपके प्राप्तांक सूचित करने से पूर्व उनमें आवश्यक सुधार करवा लें।

यदि आपको लगे कि आपके ग्रेड कार्ड में आपके सत्रीय कार्य अंक ठीक से प्रतिबिंबित नहीं हो रहे तो उस दशा में भी आप अध्ययन केंद्र संयोजक के संपर्क कर SED के पास सही अंक भिजवा सकते हैं।

अपने सत्रीय कार्य पत्रकों के साथ अध्ययन सामग्रियाँ सत्रीय कार्य प्रश्नावलियों को लेकर **अपनी शंकाएं संलग्न नहीं करें। उन्हें अलग से इग्नू के मैदान गढ़ी, नई दिल्ली–110068** में अवस्थित संबद्ध विद्यापीठ के निर्देशक के पास भेजें। ऐसे पत्र के साथ अपना पूरा प्रवेश क्रमांक, नाम, पता, पाठ्यक्रम का शीर्षक, इकाई या सत्रीय कार्य क्रमांक भी अपने पत्र पर ऊपर लिखें।

शिक्षक मूल्यांकित (TMA) सत्रीय कार्यों के लिए विशेष निर्देश :

1) अपना क्रमांक, नाम, पूरा पता, हस्ताक्षर तथा तिथि अपने सत्रीय कार्य के प्रथम पृष्ठ पर दाहिने कोने पर अवश्य लिखें।

2) कार्यक्रम का नाम, पाठ्यक्रम कोड, पाठ्यक्रम नाम, सत्रीय कार्य कोड और अपने अध्ययन केंद्र का नाम अपने पहले पृष्ठ के बाएं कोने पर लिखें।

पाठ्यक्रम कोड तथा सत्रीय कोड सत्रीय कार्य पुस्तिका से उद्धृत किए जा सकते हैं।

आपके सत्रीय कार्य का प्रथम पृष्ठ कुछ इस प्रकार हो सकता है :

क्रमांक संख्या .....

कार्यक्रम : ..... **नाम :** .....
पाठ्यक्रम कोड : ..... **पता :** .....
.....
पाठ्यक्रम शीर्षक : ....
सत्रीय कार्य कोड : ..... **हस्ताक्षर :** .....
अध्ययन केंद्र : ..... **तिथि :** .....

3) सत्रीय कार्य पत्र प्रश्नावली को ध्यान से पढ़ें और उसमें दिए गए निर्देशों का पालन करते हुए अपने उत्तर लिखें।

4) उन इकाइयों को भी पढ़ें जिन पर प्रश्न आधारित हैं। प्रश्न से संबंधित महत्त्वपूर्ण बिंदुओं की सूची बनाए, उस सूची को एक तर्कपूर्ण क्रम में संजो कर अपने उत्तर की प्रारंभिक रूपरेखा बनाएं। किसी विवरणात्मक प्रश्न का उत्तर लिखते समय उसकी प्रस्तावना और निष्कर्ष पर विशेष ध्यान दें। प्रस्तावना में प्रश्न की संक्षिप्त व्याख्या के साथ यह बताएं कि आप अपने उत्तर को किस प्रकार विकसित करने जा रहे हैं। निष्कर्ष में आपके उत्तर का सार होना चाहिए। ध्यान रखें कि आपके उत्तर तर्कपूर्ण और सुनिबद्ध हो, उसके वाक्यों एवं अनुच्छेदों के बीच सहज संबंध और तारतम्य हो। आपके उत्तर पूछे गए प्रश्न से ही संबद्ध हो। ध्यान रखें कि प्रश्न से जुड़े सभी मुद्दों पर आपने चर्चा की हो। जब आप अपने उत्तर से संतुष्ट हों, तभी उसे अंतिम रूप से सत्रीय कार्य पत्रकों में स्थान दें। महत्त्वपूर्ण बिंदुओं/वाक्यों को आप अधोरैखित कर सकते हैं। यदि परिमाणात्मक प्रश्न हलकर रहे हैं तो उसकी सही रूपरेखा का अनुसरण करें और जहाँ आवश्यक हों टिप्पणियाँ या व्याख्यात्मक वाक्य भी अवश्य लिखें।

5) केवल बड़े आकार का कागज प्रयोग करें और सभी पन्नों को ध्यान से बांध दें। बहुत पतला कागज नहीं लें। बायीं और कम से कम चार सेंटीमीटर का हाशिया छोड़ें तथा एक प्रश्न से दूसरे पर जाते हुए कम से कम चार पंक्तियों का अंतर ज़रूर रखें। इससे मूल्यांकनकर्ता को अपनी टिप्पणियाँ/सुझाव लिखने के लिए उचित स्थान मिल जाएगा।

6) अपने हाथ से उत्तर लिखें। उत्तरों का मुद्रण या टंकन नहीं करें। विश्वविद्यालय द्वारा भेजे गए अध्ययन खंडों या इकाइयों की नकल भी नहीं करें। अपने उत्तर अपने शब्दों में लिखे जिससे आप द्वारा अध्ययन सामग्री को समझने की झलक मिल सके।

7) किसी अन्य सहपाठी से नकल नहीं करें। यदि नकल करने का आभास मिला तो मूल्यांकनकर्ता आपके कार्य को अस्वीकार कर सकता है।

8) प्रत्येक सत्रीय कार्य अलग-अलग तैयार करें। उन्हें एक साथ लगाते हुए न लिखें न बांधें।

9) प्रत्येक उत्तर के साथ उसका अपना प्रश्न क्रमांक लिखें।

10) संपूर्ण सत्रीय कार्य अपने अध्ययन केंद्र के संयोजक को सौंपें। अन्य किसी स्थान पर जमा की गई शिक्षक मूल्यांकित सत्रीय कार्य पुस्तिकाओं का मूल्यांकन नहीं हो पाएगा।

11) सत्रीय कार्य जमा कराते समय उनकी पावती अवश्य ले लें– यह विनिर्दिष्ट पावती कार्ड पर होनी चाहिए।

12) यदि आपने अध्ययन केंद्र में परिवर्तन का आवेदन किया हो तो जब तक यह परिवर्तन अधिसूचित नहीं हो, आपको अपने मूल अध्ययन केंद्र में ही सत्रीय कार्य जमा कराने चाहिए।

13) यदि आपके सत्रीय कार्य के मूल्यांकन में कोई तथ्यात्मक त्रुटि रह जाए– अर्थात् कोई प्रश्न या अंश मूल्यांकित नहीं हुआ हो या अंकों का योग ठीक से नहीं हुआ हो तो केंद्र संयोजक से संपर्क करें ताकि आपके अंक सटीक रूप से मुख्यालय को प्रेषित हो जाएं।

6.2 सत्रांत परीक्षा

जैसे पहले भी संकेत किया गया है, सत्रांत परीक्षा मूल्यांकन पद्धति का सबसे बड़ा अंग है। अंतिम परिणाम में इसका भारमान 70% है।

आपको अंतिम तिथि से पूर्व, अर्थात् जून की परीक्षा के लिए 31 मार्च तक तथा दिसंबर की परीक्षा हेतु 30 सितंबर तक अपना ऑनलाइन फॉर्म भर देना चाहिए।

विश्वविद्यालय वर्ष में दो बार, जून और दिसंबर में, सत्रांत परीक्षाएं आयोजित करता है। आप प्रवेश का एक वर्ष पूरा करने पर ही पहली बार परीक्षा दे सकते हैं। पहले और दूसरे सेमेस्टर की परीक्षा आप एक वर्ष पूर्ण होने पर एक साथ देंगे। इसी प्रकार, तीसरे और चौथे सेमेस्टर की परीक्षा दूसरा वर्ष पूर्ण होने पर तथा शेष दोनो (5वें तथा 6वें) की तीसरा वर्ष पूर्ण होने पर दे पाएंगे। यदि आप किसी नियत सत्रांत परीक्षा में नहीं बैठ पाते हैं तो अगले दिसंबर या जून में वह परीक्षा दे सकते हैं।

अध्येता को किसी सत्रांत परीक्षा में इन शर्तों के पूरा करने पर ही भाग लेने की अनुमति मिलती है :

- पाठ्यक्रमों में उनका पंजीकरण अभी वैध है, समयावधि से पार नहीं चला गया है।
- नियत तिथि से पहले आवश्यक सत्रीय कार्य जमा कर दिए गए हैं।
- कार्यक्रम में निर्धारित न्यूनतम पंजीकरण अवधि पूर्ण हो गई है।
- अध्येता ने अपने इच्छित पाठ्यक्रमों के लिए परीक्षा शुल्क दे दिया है।

यदि इन शर्तों को पूरा नहीं किया जाता है तो विश्वविद्यालय संबद्ध पाठ्यक्रमों को परिणाम घोषित नहीं करेगा।

यदि आप किसी सत्रांत परीक्षा में पास अंक (35%) नहीं ले पाते हैं तो आपको उस पाठ्यक्रम की परीक्षा पूर्व नियत कुल अवधि (6 वर्ष) के भीतर ही दुबारा देनी होगी।

ऑन लाइन परीक्ष फॉर्म जमा करना

प्रत्येक परीक्षा (जून एवं दिसंबर) में अध्येता को अलग-अलग से सत्रांत परीक्षा फार्म भरना होगा। सभी इच्छित पाठ्यक्रमों का फार्म एक साथ भरा जाएगा। फॉर्म भरते समय गलतियों और परीक्षा देने के समय पर कठिनाइयों से बचने के लिए आप ऐसा करें :

1) परीक्षा फॉर्म जमा करने की समय-सारिणी में परिवर्तनों का ज्ञान पाने हेतु अपने अध्ययन केंद्र/क्षेत्रीय केंद्र/SED से संपर्क में रहें।

2) फॉर्म में सारा विवरण ध्यानपूर्वक और सटीक रूप से भरें ताकि फॉर्म की जांच में विलंब न हो और वह रद्द न हो जाए।

3) अपना परीक्षा केंद्र प्रवेश पत्र डाउनलोड करने तक फॉर्म में भरा गया सारा विवरण संभाल कर रखें।

परीक्षा शुल्क एवं उसकी भुगतान विधि

सत्रांत परीक्षा फॉर्म भरने की समय सारिणी इग्नू की वेबसाइट पर प्रत्येक सत्र में सुलभ रहती है।

परीक्षा शुल्क

रु 150/– प्रति सैद्धांतिक पाठ्यक्रम

रु 150/– प्रति व्यावहारिक पाठ्यक्रम

भुगतान विधि

क्रेडिट कार्ड/डेबिड कार्ड/नेट बैंकिंग

एक बार जमा किया गया परीक्षा शुल्क न तो वापिस किया जाता है और न ही उसका समंजन होता है – भले ही अध्येता परीक्षा में शामिल नहीं हो पाए।

सत्रांत परीक्षा प्रवेश-पत्र

प्रवेश पत्र परीक्षार्थियों को प्रेषित नहीं किए जाते। सत्रांत परीक्षा प्रारंभ होने के 7–10 दिन पूर्व उन्हें इग्नू की वेबसाइट पर रख दिया जाता है। आपको परामर्श दिया जाता है कि आपका प्रवेश क्रमांक और अध्ययन कार्यक्रम का नाम दर्ज करके उस प्रवेश-पत्र को मुद्रित कर लें तथा उसके और विश्वविद्यालय द्वारा जारी एवं क्षेत्रीय केंद्र के निर्देशक द्वारा सत्यापित परिचय पत्र के साथ ही परीक्षा केंद्र पर पहुँचें। वैध इग्नू छात्र पहचान पत्र के बिना किसी परीक्षार्थी को परीक्षा में नहीं बैठने दिया जाएगा।

प्रत्येक परीक्षार्थी को अपने पहचान पत्र और प्रवेश पत्र के साथ ही परीक्षा केंद्र पर आना चाहिए। वे उन्हीं पाठ्यक्रमों की परीक्षा दे पाएंगें जिनकी नियत न्यूनतम शिक्षा अवधि उन्होंने पूरी कर ली है और जिनके लिए उनका पंजीकरण मान्य है। यदि किसी का पहचान पत्र खो गया हो तो उसे परीक्षा प्रारंभ होने से पूर्व अपने क्षेत्रीय कार्यालय से उसकी सत्यापित प्रति बनवा लेनी चाहिए। बिना वैध पहचान पत्र के अध्येता का परीक्षा केंद्र में प्रवेश नहीं मिल पाएगा।

परीक्षा तिथि विवरणिका

प्रत्येक पाठ्यक्रम की परीक्षा तिथि एवं समय का विवरण पत्र सभी अध्ययन केंद्रों पर एक मास पूर्व ही भेज दिया जाएगा। यह विवरण इग्नू न्यूज़ लैटर में भी होता है और वेबसाइट पर रहता है। आप इसे www.ignou.ac.in पर देख सकते हैं। यदि आपके किन्हीं दो पाठ्यक्रमों की तिथि और समय में टकराव हो तो आपको एक पाठ्यक्रम की परीक्षा देकर दूसरे को अगली सत्रांत परीक्षा तक स्थगित करने की सलाह दी जाती है।

परीक्षाफल की घोषणा

यह जांच कर लेना आपका अपना कर्त्तव्य है कि आप किसी पाठ्यक्रम की परीक्षा हेतु अपना पंजीकरण करा चुके हैं और आप उसके पात्र भी हैं। यदि आप इन बातों को अनदेखा कर परीक्षा देते हैं तो आपका परीक्षाफल रद्द कर दिया जाएगा।

अगली सत्रांत परीक्षा के फॉर्म भरने की अंतिम तिथि से पूर्व पिछली परीक्षा के परिणाम घोषित करने का भरसक प्रयास किया जाता है। यदि आपका परिणाम नहीं आया हो तो आप अगला फॉर्म बिना प्रवेश शुल्क जमा किए भर सकते हैं। यदि आप इस प्रकार भरे गए फॉर्म के पाठ्यक्रम की परीक्षा देते हैं तो आपको इग्नू के पक्ष में डिमांड ड्राफ्ट से आवश्यक शुल्क राशि दिल्ली में कुलसचिव SED के पास भेजनी होगी। ऐसा नहीं करने पर आपका परीक्षा परिणाम घोषित नहीं होगा।

परीक्षाफल की शीघ्र घोषणा

जिन अध्येताओं को कहीं उच्चतर अध्ययन या रोज़गार हेतु अपने परीक्षाफल और ग्रेड कार्ड कहीं किसी निश्चित तिथि तक जमा कराने हों उनकी सुविधा के लिए विश्वविद्यालय में शीघ्र परिणाम घोषणा की व्यवस्था भी है। अध्येता अपनी उत्तर पुस्तिकाएँ पहले जांच कर परिणाम घोषित करने के लिए आवेदन कर सकते हैं। इसके लिए अध्येता को (i) प्रतिपाठ्यक्रम रु1000/– के शुल्क का इग्नू के पक्ष में डिमांड ड्राफ्ट द्वारा भुगतान करते हुए वेबसाइट पर सुलभ एक फॉर्म विशेष भर कर आवेदन करना होगा, साथ ही (ii) आगे प्रवेश/रोज़गार पेशकश की सत्यापित प्रति भी जमा करानी होगी। यह प्रार्थना आपको परीक्षा आरंभ होने से पहले अर्थात् 1 जून या 1 दिसंबर (जब भी आप परीक्षा दे रहे हों) से पहले करनी होगी। ऐसी दशा में विश्वविद्यालय विशेष व्यवस्था कर आपकी उत्तर पुस्तिकाएँ जाँच कर परीक्षा होने के एक मास की अवधि में परिणाम घोषित करेगा।

उत्तर पुस्तिकाओं का पुनर्मूल्यांकन

यदि आप किसी सत्रांत परीक्षा में प्राप्त अंकों से संतुष्ट नहीं हैं तो आप परिणाम घोषणा के एक महीने के भीतर पुनर्मूल्यांकन के लिए आवेदन कर सकते हैं। इसके लिए प्रति पाठ्यक्रम आपको रु.750/– के शुल्क के साथ ऑनलाइन आवेदन करना होगा। पुराने और नए अंकों की तुलना कर जो बेहतर होगा उसे अध्येता के ग्रेड कार्ड पर दर्ज़ कर दिया जाएगा।

पुनर्मूल्यांकन केवल सत्रांत परीक्षा के लिए अनुमित है, व्यवहारिक/प्रकल्प रिपोर्ट/ कार्यशाला, सत्रीय कार्य, ट्यूटोरियल या सेमिनार आदि में नहीं। इस हेतु एक आवेदन-पत्र का नमूना और नियम-विनियम विश्वविद्यालय की वेबसाइट पर दिए गए हैं।

डिवीज़न/श्रेणी में सुधार

स्नातक उपाधि कार्यक्रम उत्तीर्ण कर चुके अध्येता चाहे तो फिर से सत्रांत परीक्षा देकर अपना परीक्षाफल सुधार सकते हैं। किंतु उन्हीं को यह सुविधा मिलेगी जो द्वितीय या प्रथम श्रेणी पाने से 2% से कम से वंचित रह गए हों।

ऐसे अध्येता जून की सत्रांत परीक्षा के लिए 1 से 30 अप्रैल तथा दिसंबर परीक्षा के लिए 1 से 31 अक्तूबर के बीच प्रति पाठ्यक्रम रु.750/– के शुल्क को इग्नू के पक्ष में डिमांड ड्राफ्ट (नई दिल्ली में देय) द्वारा भुगतान सहित आवेदन कर सकते हैं।

ध्यान रहे इस प्रकार ग्रेड सुधार केवल सत्रांत परीक्षा के प्राप्तांकों में अनुमित है – व्यवहारिक/प्रयोगशाला कार्य/प्रकल्प, कार्यशाला, सत्रीय कार्य, सेमिनार ट्यूटोरियल आदि में नहीं।

अपने अंक सुधारने के इच्छुकों को ग्रेड कार्ड/अंक तालिका जारी किए जाने के 6 मास की अवधि में आवेदन करना होगा–यदि उक्त कार्यक्रम हेतु उनके पंजीकरण की अवधि ग्रेड सुधार परीक्षा होने तक वैध हो। इसके लिए नियम-विनियम विश्वविद्यालय की वेबसाइट पर दर्ज है।

उत्तर पुस्तिकाओं की फोटो कॉपी प्राप्त करना

परीक्षाफल से असंतुष्ट अध्येता प्रति पाठ्यक्रम रु.100/– का भुगतान कर उत्तर-पुस्तिका की फोटो कॉपी ले सकते हैं। इसके लिए परीक्षापरिणाम घोषित होने के 45 दिन की अवधि में नियत पत्रक पर रु.100 प्रति पाठ्यक्रम ऑनलाइन भुगतान कर SED, इग्नू, नई दिल्ली में आवेदन करना होगा।

अपनी परीक्षाओं के विषय में विश्वविद्यालय से पत्र व्यवहार करते समय अपना प्रवेश क्रमांक और पूरा पता साफ-साफ लिखें। इन विवरणों के अभाव में SED आपकी किसी समस्या पर ध्यान नहीं दे पाएगा।

7 अन्य उपयोगी जानकारियाँ

छात्रवृत्तियाँ और शुल्क वापसी

शारीरिक बाधिता ग्रस्त अध्येताओं को इग्नू में प्रवेश लेने पर भारत सरकार की छात्रवृत्तियाँ प्राप्य हैं। उन्हें अपने राज्य के समाज कल्याण निर्देशालय या समाज कल्याण अधिकारी के कार्यालय से उपयुक्त फॉर्म लेकर और उसे भरकर संबद्ध इग्नू क्षेत्रीय निर्देशक के कार्यालय से SRD को अग्रेषित कराना होगा।

आरक्षण प्राप्त अनुसूचित जाति/जनजातियों तथा शारीरिक बाधिताग्रस्त अध्येताओं को प्रवेश के समय तो शुल्क भरना होगा। उसके बाद उन्हें इग्नू के क्षेत्रीय निर्देशक के कार्यालय द्वारा अपनी शुल्क वापसी के प्रार्थना-पत्र संबद्ध राज्य के समाज कल्याण अधिकारी या निर्देशक के कार्यालय को भिजवाने होंगे।

शिक्षण के माध्यम में परिवर्तन

अध्ययन सामग्री के पहले सेट की प्राप्ति के 30 दिन के भीतर आप अपना माध्यम बदल सकते हैं। किंतु इसके लिए आपको रु.350/– का आवेदन शुल्क और प्रति पाठ्यक्रम 4 श्रेयांक वाले पाठ्यक्रमों पर रु.350/– एवं 6 श्रेयांक वाले पाठ्यक्रमों हेतु रु.700/– प्रति की दर से

भुगतान करना होगा। यह भुगतान इग्नू के पक्ष में किंतु संबद्ध क्षेत्रीय केंद्र के नगर क्षेत्र में देय डिमांड ड्राफ्ट द्वारा होगा। सभी माध्यम परिवर्तन आवेदन नियत अवधि में क्षेत्रीय केंद्र के पास ही किए जाने चाहिए।

डाक पते में सुधार/परिवर्तन

नाम एवं डाक पाते में परिवर्तन/सुधार हेतु एक मुद्रित फॉर्म है। उसकी प्रति विश्वविद्यालय की वेबसाइट पर Student Zone में भी है। यदि आपको अपने नाम/पते में कोई परिवर्तन कराना है तो अपने क्षेत्रीय निर्देशक के माध्यम से कुलसचिव SRD के पास आवेदन कर सकते हैं। इस विषय में विश्वविद्यालय के किसी अन्य अधिकारी से पत्र व्यवहार नहीं करें। प्रायः ऐसा परिवर्तन करने में 6 सप्ताह का समय लग जाता है। अतः इस अवधि में सभी पत्रों को आपने नवीन पते पर भिजवाने की व्यवस्था आपको स्वयं करनी चाहिए।

अध्ययन केंद्र परिवर्तन

आपको ऐसा ही अध्ययन केंद्र चुनना ज़रूरी है जहाँ आपको कार्यक्रम चल रहा हो। विश्वविद्यालय यथासंभव आपका इच्छित अध्ययन केंद्र ही आपको देगा। फिर भी अध्येता की सहमति के बिना ही प्रशासकीय कारणों से अध्ययन केंद्र बदलने का अधिकार विश्वविद्यालय को है।

आप अध्ययन केंद्र परिवर्तन का प्रार्थना पत्र अपने क्षेत्रीय निर्देशक को भेजें। उसकी एक प्रति मुख्यालय में SED को भी अग्रेषित कर दें।

सभी कार्यक्रमों के लिए परामर्श व्यवस्था सभी अध्ययन केंद्रों पर नहीं है। अतः अपना नया केंद्र चुनने से पूर्व यह देख लें कि वहां आपका कार्यक्रम उपलब्ध है या नहीं। यथासंभव केंद्र परिवर्तन के अनुरोध स्वीकार कर लिए जाते हैं किंतु नए अध्ययन केंद्र में आपका स्थानांतरण वहां उपलब्ध सीटों पर निर्भर करेगा।

क्षेत्रीय केंद्र में परिवर्तन

यदि आप क्षेत्रीय केंद्र बदलना चाहते हैं तो अपने मूल क्षेत्रीय केंद्र में आवेदन करें और उसकी एक प्रति अपने इच्छित नए क्षेत्रीय केंद्र को भी भेज दें। साथ ही आपके अपने मूल अध्ययन केंद्र के संयोजक से वहां जमा कराए गए सत्रीय कार्यों का प्रमाण-पत्र भी संलग्न करना होगा। मूल क्षेत्रीय केंद्र आपके सभी दस्तावेज नए क्षेत्रीय केंद्र को भिजवा देगा और इसकी सूचना कुलसचिव, SRD तथा अध्येता को भी प्रेषित कर देगा। यदि कोई अध्येता थल/वायु/जलसेना के क्षेत्रीय केंद्र से किसी अन्य केंद्र का वर्तमान सत्र के मध्य स्थानांतरण चाहता है तो उसे क्षेत्रीय केंद्र को शुल्क-अंश का भुगतान करना होगा। यदि किसी सत्र या चक्र के प्रारंभ में अंतरण चाहते हैं तो आपको क्षेत्रीय केंद्र में कार्यक्रम शुल्क जमा करना होगा। किंतु ध्यान रहें कि स्थानांतरण संबद्ध केंद्र में सुलभ स्थान पर निर्भर करेगा।

ग्रेड कार्ड/अंकतालिका की प्रतिलिपि जारी करना

इग्नू, नई दिल्ली के पक्ष में रु.750/– के डिमांड ड्राफ्ट के साथ नियत फॉर्म पर आवेदन कर प्रमाण पत्र की प्रतिलिपि प्राप्त की जा सकती है। इस प्रतिलिपि के लिए प्रार्थना पत्र के साथ आपको निम्नलिखित दस्तावेज लगाने होंगे।

1) एक रु.10/– का गैर न्यायिक स्टैम्प पेपर पर एक शपथ पत्र।

2) उपाधि पत्र खो जाने की पुलिस के पास दर्ज प्रथम दृष्टया की प्रति।

3) आवश्यक शुल्क का डिमांड ड्राफ्ट/धनादेश।

इस कार्य हेतु फॉर्म का प्रारूप विश्वविद्यालय की वेबसाइट पर है।

पुनः प्रवेश

यदि नियत 6 वर्ष में यह कार्यक्रम पूरा नहीं कर पाते तो विश्वविद्यालय में एक पुनः प्रवेश का प्रावधान भी है। आपको पुनः प्रवेश के लिए दो कदम उठाने होंगे :

क) किसी सामान्य छात्र की भांति कार्यक्रम का शुल्क भर कर नये रूप में सभी शर्तों का पूरा करते हुए शुल्क भर कर प्रवेश ले लें।

ख) आप पहली बार में अर्जित अपने श्रेयांक नए प्रवेश क्रमांक पर अंतरित करने के लिए शुल्क के साथ विश्वविद्यालय के पास आवेदन कर दें।

यदि उस समय पाठ्यक्रम और क्रियाविधियाँ पुराने पंजीकरण काल जैसी हुईं तो संपूर्ण श्रेयांक अंतरित हो सकते हैं।

समकालिक पंजीकरण

किसी भी शैक्षिक सत्र में एक अध्येता को केवल एक कार्यक्रम में पंजीकरण कराने की अनुमति है। अतः आप किसी भी सत्र में केवल एक कार्यक्रम में प्रवेश का आवेदन करें। हाँ, आप चाहें तो किसी भी कार्यक्रम के साथ कोई 6 मास का प्रमाण-पत्र पाठ्यक्रम अवश्य कर सकते हैं। इसका उल्लंघन करने वाले के सभी कार्यक्रमों में प्रवेश रद्द कर दिए जाएंगे और उनके भरे गए सभी शुल्क जब्त हो जाएंगे।

प्रवसन प्रमाण-पत्र

निम्न दस्तावेजों के साथ क्षेत्रीय निर्देशक के पास प्रवासन प्रमाण-पत्र के लिए आवेदन किया जा सकता है :

1) आवेदन-पत्र (इग्नू की वेबसाइट का सुलभ)

2) अंक तालिका की सत्यापित प्रति

3) क्षेत्रीय केंद्र के नगर में इग्नू को देय रु.500/– के डिमांड ड्राफ्ट द्वारा शुल्क का भुगतान।

शुल्क की वापसी

शुल्क वापसी के आवेदन पर इस प्रकार विचार होगा :

क) प्रवेश फॉर्म भरने की अंतिम तिथि से पूर्व रु.200/– की कटौती के बाद

ख) प्रवेश फॉर्म भरने की अंतिम तिथि के 15 दिन तक रु.500/– की कटौती के बाद

ग) प्रवेश फार्म भरने की अंतिम तिथि के 30 दिन तक रु.1000 की कटौती के बाद

घ) अंतिम तिथि के तीस दिन बाद, कोई शुल्क वापसी नहीं।

च) प्रवेश की अंतिम तिथियों पर पृथक्-पृथक् विचार होगा, बिना विलंब शुल्क और विलंब शुल्क सहित तिथियों को अलग-अलग माना जाएगा। किंतु विलंब शुल्क किसी भी दशा में वापस नहीं किया जाएगा।

छ) उपर्युक्त (क) से (ग) तक अभ्यार्थी संबद्ध क्षेत्रीय निर्देशक के पास शुल्क वापसी के लिए लिखित आवेदन करेगा। क्षेत्रीय केंद्र शुल्क राशि इग्नू के खाते में जमा हो चुकने की प्रतिपुष्टि के बाद यथासंभव उक्त आवेदन पर कार्यवाई पूरी कर देगा।

प्रवेश एवं अन्य विश्वविद्यालय विषयक विवाद

यदि कोई कानूनी केस दायर किया जाता है तो न्यायाधिकार क्षेत्र नई दिल्ली होगा।

8 कुछ उपयोगी पते

अपने अध्ययन काल में आपका नियम-विनिमय विषयक अतिरिक्त जानकारी तथा अपना कार्यक्रम पूरा करने से जुड़ी कुछ समस्याओं के निराकरण संबंधी जानकारी की जरूरत हो सकती है। अतः आपको यह मालूम होना चाहिए कि कौन-सी जानकारी कहां से मिलेगी। यहाँ हम विशेष जानकारियाँ या समस्या निदान पाने के लिए विश्वविद्यालय के उपयुक्त कार्यालयों के पते, फोन नंबर तथा ई-मेल आपको बता रहे हैं :

1	पहचान पत्र, शुल्क रसीद, सद्भावी प्रमाण पत्र, प्रवासन, छात्रवृत्ति फॉर्म	संबद्ध क्षेत्रीय केंद्र
2	अध्ययन सामग्री नहीं मिलना	सामग्री निर्माण एवं वितरण प्रभाग (एमपीडीडी)
3	परीक्षा फॉर्म प्रवेश परीक्षा, तिथि तालिका इग्नू परीक्षा प्रवेश पत्र आदि की जानकारियाँ	सहायक कुलसचिव (Exam-II), SED, ब्लॉक-12, इग्नू, मैदान गढ़ी, नई दिल्ली-110068. ईमेलः evaluationsed@ignou.ac.in फोन- 29536743, 29535924-32 / Extn. 2202, 2209
4	परीक्षा परिणाम, पुनर्मूल्यांकन, ग्रेड कार्ड, अंतःकालीन प्रमाणपत्र, परीक्षाफल की पहले प्राप्ति, अनुलिपि	सह-कुलसचिव (Exam-III), SED, ब्लॉक-12, इग्नू, मैदान गढ़ी, नई दिल्ली-110068. ईमेलः sedgrievnace@ignou.ac.in फोन-29536103, 29535924-32 / Extn. 2201, 2211, 1316
5	स्त्रीय कार्य ग्रेड / अंक नहीं दिखना	सहायक कुलसचिव (सत्रीय कार्य) SED, ब्लॉक-3, कमरा न. -12, इग्नू, मैदान गढ़ी, नई दिल्ली-110068. ईमेलः assignments@ignou.ac.in फोन-29535924 Extn. 1312, 1319, 1325
6	मौलिक उपाधि डिप्लोमा / उपाधि / डिप्लोमा सत्यापन	उप-कुलसचिव (Exam-I), SED, ब्लॉक-9, इग्नू, मैदान गढ़ी, नई दिल्ली-110068. ईमेलः evaluationsed@ignou.ac.in फोन-29535438, 29535924-32 / Extn. 2224, 2213
7	मूल्यांकन विषयक अध्येता शिकायतें	सहायक कुलसचिव (Student Grievance), SED, ब्लॉक-3, इग्नू, मैदान गढ़ी, नई दिल्ली-110068. ईमेलः sedgrievance@ignou.ac.in फोन-29532294, 29535924-

		32 / Extn. 1313
8	शैक्षिक विषय वस्तु	संबद्ध विद्यापीठ निर्देशक
9	अध्येता सहायक सेवाएं एवं अध्येता शिकायत, इग्नू के विभिन्न पाठ्यक्रमों के विषय में प्रवेश पूर्व जानकारी	क्षेत्रीय निर्देशक, अध्येता सेवा केंद्र, इग्नू, मैदान गढ़ी, नई दिल्ली-110068. ईमेलः ssc@ignou.ac.in फोन-29535714, 29533869, 2953380 फैक्स : 29533129

इग्नू से आपके अधिकांश काम ऑन-लाइन हो जाते हैं। जहां कहीं आपको कोई लिखित दस्तावेज जमा करना है, वहां भी उनके प्रारूप आपको इग्नू की वेबसाइट से मिल जाएंगे। विश्वविद्यालय की वेबसाइट पर Student Zone से उन्हें प्राप्त कर ध्यानपूर्वक उन्हें भर लें।

1 मूल पाठ्यक्रम

प्रारंभिक व्यष्टि अर्थशास्त्र (बीईसीसी 101) 6 क्रेडिट

अर्थशास्त्र एक जीवंत विषय है और यह आर्थिक कर्ताओं को इस प्रकार के निर्णय लेने में सहायक होता है : किन वस्तुओं का उत्पादन करें? उत्पादन कैसे करें? किन तकनीकों का प्रयोग करें? किन कारकों या संसाधनों का उपयोग करें? वह भी किन संयोजनों में तथा किसी वस्तु की कितनी मात्रा का उत्पादन करें? साथ ही, इन प्रश्नों के उत्तर भी यहीं प्राप्त होते हैं कि उपभोक्ता अपने खरीदारी विषयक निर्णय कैसे लेते हैं और उनके चयन पर कीमतों एवं आय आदि के परिवर्तनों के क्या प्रभाव पड़ते हैं।

आज व्यष्टि अर्थशास्त्र में हम एक बड़े वितान पर फैली गतिविधियों को शामिल करते हैं। इनमें सम्मिलित हैं : (क) उपभोक्ता का व्यवहार या चयन प्रक्रिया; (ख) उत्पादक का व्यवहार या उत्पादन कार्य का संयोजन कैसे होता है और वह कैसे संचालित किया जाता है, लागत फलनों की इन कार्यों में क्या विशेष भूमिका होती है और बाज़ार की संरचना के विभिन्न स्वरूप क्या होते हैं; (ग) उत्पादन प्रक्रिया में अपने-अपने संसाधन सुलभ कराकर विभिन्न व्यक्तियों द्वारा सहयोग; (घ) दक्षता के विभिन्न प्रकार भेद; (च) बाज़ार किन परिस्थितियों में विफल हो जाते हैं और सरकार इन दशाओं में क्या भूमिका निभा सकती है। प्रारंभिक व्यष्टि अर्थशास्त्र का यह वर्तमान पाठ्यक्रम अध्येताओं को इन सभी आयामों से परिचित कराने के उद्देश्य से प्रेरित है। इस पाठ्यक्रम में ये 6 खंड हैं :

पाठ्यक्रम

खंड 1 एक परिचय

इकाई 1 अर्थशास्त्र और अर्थव्यवस्था का परिचय
इकाई 2 मांग एवं आपूर्ति विश्लेषण
इकाई 3 माँग और आपूर्ति : व्यावहारिक अनुप्रयोग

खंड 2 उपभोक्ता व्यवहार के सिद्धांत

इकाई 4 उपभोक्ता व्यवहार : गणनावाचक दृष्टिकोण
इकाई 5 उपभोक्ता व्यवहार : क्रमवाचक दृष्टिकोण

खंड 3 उत्पादन एवं लागतें

इकाई 6 एक परिवर्ती आगत का उत्पादन फलन
इकाई 7 दो एवं दो से अधिक आगतों का उत्पादन फलन
इकाई 8 उत्पादन लागत

खंड 4 बाज़ार संरचना

इकाई 9 पूर्ण प्रतियोगिता : फर्म और उद्योग के संतुलन
इकाई 10 एकाधिकार : कीमत और उत्पादन निर्णय
इकाई 11 एकाधिकारिक प्रतियोगिता : कीमत और उत्पादन निर्णय
इकाई 12 अल्पाधिकार : कीमत और उत्पादन निर्णय

खंड 5 साधन बाज़ार

इकाई 13 साधन बाज़ार : साधन कीमत निर्धारण
इकाई 14 श्रम बाजार
इकाई 15 भूमि बाज़ार

खंड 6 आर्थिक क्षेम : बाज़ार की विफलता और राज्य की भूमिका

इकाई 16 आर्थिक क्षेम : पूर्ण प्रतियोगिता के अंतर्गत आवंटनात्मक दक्षता
इकाई 17 बाज़ार तंत्र की दक्षता : बाज़ार की विफलता और राज्य की भूमिका

अर्थशास्त्र हेतु गणितीय प्रविधियाँ–I (बीईसीसी 102) 6 क्रेडिट

पाठ्यक्रम अध्येता का परिचय कुछ मूल गणितीय संकल्पनाओं, उपस्करों और तकनीकों से कराते हुए यह समझाता है कि इनका आर्थिक विश्लेषण में किस प्रकार प्रयोग किया जाता है। इसी प्रक्रिया में आप स्वयं भी यह विचार करना प्रारंभ कर देंगे कि किसी आर्थिक घटनाक्रम/प्रक्रिया आदि के लिए कौन-सी गणितीय विधि का प्रयोग उचित होगा। यहां हम आपको निर्देशांक ज्यामिति, अवकलन एवं कलन तथा एकचरीय अभीष्टीकरण सिखाएंगे और पाठ्यक्रम के अंत में आपका कुछ परिचय रैखिक एवं अरैखिक अंतर समीकरणों से भी होगा।

पाठ्यक्रम

खंड 1 प्रारंभिक संकल्पनाएँ

इकाई 1 समुच्चय और समुच्चयों पर संक्रियाएँ
इकाई 2 संबंध और फलन
इकाई 3 तर्कशास्त्र

खंड 2 एक स्वतंत्र चर के फलन

इकाई 4 फलनों के आधारभूत प्रकार
इकाई 5 वैश्लेषिक ज्यामिति
इकाई 6 अनुक्रम तथा श्रेणियाँ

खंड 3 अवकलन गणित

इकाई 7 सीमाएँ
इकाई 8 सान्तत्य
इकाई 9 प्रथम कोटि अवकलज
इकाई 10 उच्च कोटि अवकलज

खंड 4 एक चर – अभीष्टीकरण

इकाई 11 अवतल और उत्तल फलन
इकाई 12 अभीष्टीकरण की विधियां

खंड 5 समाकलन

इकाई 13 अनश्चित समाकलन
इकाई 14 निश्चित समाकलन

खंड 6 अंतर समीकरण

इकाई 15 रैखिक अंतर समीकरण
इकाई 16 अरैखिक अंतर समीकरण

ignou THE PEOPLE'S UNIVERSITY

प्रारंभिक समष्टि अर्थशास्त्र (बीईसीसी 103) 6 क्रेडिट

यह पाठ्यक्रम अध्येता को समष्टि अर्थशास्त्र की मूल से कल्पनाओं से परिचित कराता है। इसमें बचत, निवेश, सकल घरेलू उत्पाद (GDP) मुद्रा, मुद्रास्फीति और भुगतान शेष आदि के निर्धारण और मापन से जुड़ी प्रारंभिक संकल्पनाओं पर चर्चा की गई है।

पाठ्यक्रम

खंड 1 समष्टि अर्थशास्त्र और राष्ट्रीय आय लेखांकन विषयक मुद्दे

इकाई 1 मुद्दे और संकल्पनाएँ
इकाई 2 राष्ट्रीय आय लेखांकन
इकाई 3 आर्थिक निष्पादन का मापन

खंड 2 एक आधुनिक अर्थव्यवस्था में मुद्रा

इकाई 4 मुद्रा की परिभाषा और उसके कार्य
इकाई 5 मुद्रा की मांग
इकाई 6 मुद्रा की आपूर्ति

खंड 3 मुद्रा स्फीति

इकाई 7 मुद्रा स्फीति : संकल्पना, प्रकार–भेद और मापन
इकाई 8 मुद्रा स्फीति के कारण और प्रभाव

खंड 4 अल्पकाल में संवृत अर्थव्यवस्था

इकाई 9 प्रतिष्ठित (क्लासिकी) और केंजीय प्रतिमान
इकाई 10 केंजीय आय निर्धारण प्रतिमान
इकाई 11 केंजीय प्रतिमान में राजकोषीय नीति

खंड 5 IS-LM विश्लेषण

इकाई 12 वास्तविक क्षेत्र में संतुलन
इकाई 13 मौद्रिक क्षेत्र में संतुलन
इकाई 14 नवक्लासिकी संश्लेषण

अर्थशास्त्र हेतु गणितीय प्रविधियाँ–II (बीईसीसी 104) 6 क्रेडिट

यहां हम अपने बीईसीसी–102 के विषय को ही आगे बढ़ा रहे हैं (जिसे आपने प्रथम सेमेस्टर में पढ़ा था)। यहां गणितीय अर्थशास्त्र के कई विषयों पर चर्चा की जाएगी। यहां अध्येता बहुचरीय फलनों, उनके अवकलन तथा अभीष्टीकरण की विधियां सीखेंगे। साथ ही, रैखीय बीजगणित पर भी चर्चा की जा रही है – अर्थात् सदिश, आव्यूह, निर्धारकों और अर्थशास्त्र में उनके अनुप्रयोगों के विषय में भी बातचीत होगी। प्रथम और द्वितीय कोटि के अवकल समीकरण भी हमारी चर्चा का भाग होंगे।

पाठ्यक्रम

खंड 1 अनेक चरों के फलन

इकाई 1 बहुचरीय कलन-I
इकाई 2 बहुचरीय कलन-II

खंड 2 अवकल समीकरण

इकाई 3 प्रथम कोटि अवकल समीकरण

इकाई 4 द्वितीय कोटि अवकल समीकरण

खंड 3 रैखिक बीजगणित

इकाई 5 सदिश एवं सदिश तल

इकाई 6 आव्यूह एवं निर्धारक

इकाई 7 रैखिक आर्थिक प्रतिमान

खंड 4 बहुचर अभीष्टीकरण

इकाई 8 निर्बंध अभीष्टीकरण

इकाई 9 संरोधित अभीष्टीकरण : संरोध समीकरणों सहित द्वैत

मध्यस्तरीय व्यष्टि अर्थशास्त्र–I (बीईसीसी 105) 6 क्रेडिट

यह मध्यस्तरीय व्यष्टि अर्थशास्त्र पाठ्यक्रम प्रथम सेमेस्टर के व्यष्टि अर्थशास्त्र के सिद्धांतों को आगे विकसित कर रहा है और यह विश्लेषण करता है कि किस प्रकार विकसित आर्थिक सिद्धांतों का प्रयोग कर आर्थिक कर्ताओं के उपयोगिता को अधिकतम, लागतों को न्यूनतम, लाभ को अधिकतम करने तथा उत्पादन और कीमत निर्धारण विषयक निर्णयों में सहायता हो सकती है। इन उद्देश्यों की पूर्ति के लिए यहाँ आर्थिक सिद्धांतों को ज्यामितीय, अंकगणितीय तथा अवकलन एवं कलन गणित के विचारों का प्रयोग कर व्यवहारिक स्वरूप प्रदान किया जाता है। इस पाठ्यक्रम की विषय-वस्तु को भली प्रकार समझ पाने के लिए यह अपेक्षित है कि अध्येता व्यष्टि अर्थशास्त्र के एक प्रारंभिक पाठ्यक्रम में उत्तीर्ण हो चुका हो और उसे अवकलन, प्रारंभिक बीज गणित और रेखाचित्रांकन के कौशल का ज्ञान हो।

पाठ्यक्रम 3 खंडों में विभाजित है। प्रत्येक खंड आगे कुछ इकाइयों में विभाजित हैं। प्रत्येक इकाई अपने आप में संपूर्ण होते हुए भी अन्य इकाइयों से अंतरग रूप से जुड़ी हुई है। पूरे पाठ्यक्रम में, प्रत्येक इकाई में अध्येता को प्रारंभिक सिद्धांतों, उद्धरणों-उदाहरणों तथा बोध प्रश्नों के समन्वित समुच्च्य मिलेंगे जो अध्येता के संकल्पनागत बोध को विकसित करने में सहायक होंगे। एक प्रकार से इनसे अध्येता को आर्थिक जानकारियों के मूल्यांकन, विश्लेषण और संश्लेषण करने की अपनी क्षमताएँ विकसित करने में सहायता मिलेगी।

पाठ्यक्रम

खंड 1 उपभोक्ता सिद्धांत

इकाई 1 वरीयता और उपयोगिता

इकाई 2 उपभोक्ता का संतुलन

इकाई 3 उपभोक्ता का अतिरेक

इकाई 4 चयन : अनिश्चितता के अंतर्गत एवं अंतर्कालिक चयन

खंड 2 उत्पादन और लागत

इकाई 5 एक एवं अधिक परिवर्ती साधनों वाले उत्पादन फलन

इकाई 6 लागत फलन

खंड 3 पूर्ण स्पर्धा (प्रतियोगिता) के अंतर्गत संतुलन

इकाई 7 एक स्पर्धी फर्म द्वारा अधिकतम करना

इकाई 8 एक स्पर्धी बाज़ार की दक्षता

मध्यस्तरीय समष्टि अर्थशास्त्र-I (बीईसीसी 106) 6 क्रेडिट

इस पाठ्यक्रम में अध्येता का परिचय विश्लेषण के उपस्करों का प्रयोग कराते हुए अर्थव्यवस्था के समष्टि प्रतिमान के निरूपण से कराया जा रहा है। इसमें एक संवृत अर्थव्यवस्था में उत्पादन और रोज़गार निर्धारण के अल्प एवं दीर्घकालिक परिवेशों में आय निर्धारण के वैकल्पिक सिद्धांतों पर चर्चा की गई है। साथ ही, इस संदर्भ में नीति की भूमिका बताई गई है। यहां अध्येता का एक अनावृत अर्थव्यवस्था से संबंधित विभिन्न सैद्धांतिक मुद्दों से भी परिचय कराया जा रहा है।

पाठ्यक्रम

खंड 1 सकल मांग और आपूर्ति

इकाई 1 सकल मांग वक्र
इकाई 2 सकल आपूर्ति वक्र
इकाई 3 उत्पादन और कीमतों का संतुलन

खंड 2 प्रत्याशाएं : स्फीति और बेरोज़गारी

इकाई 4 अनुयोजी प्रत्याशाएं
इकाई 5 विवेकी प्रत्याशाएं
इकाई 6 स्फीति और बेरोज़गारी

खंड 3 भुगतान संतुलन और विनिमय दरें

इकाई 7 वित्तीय बाज़ार
इकाई 8 भुगतान संतुलन
इकाई 9 विनिमय दर का निर्धारण

खंड 4 अनावृत्त अर्थव्यवस्था प्रतिमान

इकाई 10 मुन्डेल– फ्लेमिंग प्रतिमान
इकाई 11 डोर्नबुश का अतिलंघन प्रतिमान
इकाई 12 एक अनावृत्त अर्थव्यवस्था में समष्टि अर्थनीतियाँ

अर्थशास्त्र के लिए सांख्यिकीय प्रविधियाँ (बीईसीसी 107) 6 क्रेडिट

यह पाठ्यक्रम अध्येता को आंकड़े एकत्र करने और उनके संक्षेपण से परिचित कराता है। फिर यह प्रायिकता के विचार को विकसित कर असतत् एवं सतत् यादृच्छिक चरों के प्रायिकता आवंटनों की व्याख्या करता है। अध्येता को प्रतिचयन एवं सांख्यिकीय निष्कर्षण के मूल तत्वों के साथ-साथ सूचक अंकों, निश्चयात्मक काल श्रृंखलाओं और जनांकिकी विषयक प्रारंभिक संकल्पनाएँ भी यहीं समझाई गई हैं।

पाठ्यक्रम

खंड 1 वर्णनात्मक सांख्यिकी

इकाई 1 मूल सांख्यिकीय संकल्पनाएँ
इकाई 2 आँकड़ों को तालिकाबद्ध करना और रेखा चित्रांकन
इकाई 3 एकचरीय आंकड़ों को सारबद्ध करना
इकाई 4 आघूर्ण और वैषम्य– ककुदता

खंड 2 द्विचरीय एवं बहुचरीय आँकड़ों को सारबद्ध करना

इकाई 5 सहसंबंध एवं प्रतीपगमन
इकाई 6 सूचकांक
इकाई 7 निश्चयात्मक काल शृंखलाएँ और पूर्वाकलन
इकाई 8 जनांकिकी

खंड 3 प्रायिकता सिद्धांत

इकाई 9 प्राथमिक प्रायिकता सिद्धांत
इकाई 10 असतत् प्रायिकता आवंटन
इकाई 11 सतत् प्रायिकता आवंटन

खंड 4 प्रतिचयन और सांख्यिकीय निष्कर्षण

इकाई 12 प्रतिचयन की कार्यविधि
इकाई 13 अवधारणा : आंकलन और जांच
इकाई 14 काई-वर्ग जाँच (कसौटी)

मध्यस्तरीय व्यष्टि अर्थशास्त्र-II (बीईसीसी 108) 6 क्रेडिट

यह मध्यस्तरीय व्यष्टि अर्थशास्त्र पाठ्यक्रम प्रथम सेमेस्टर के व्यष्टि अर्थशास्त्र एवं तृतीय सेमेस्टर के मध्यस्तरीय व्यष्टि अर्थशास्त्र-I के सिद्धांतों को आगे विकसित कर रहा है और यह विश्लेषण करता है कि किस प्रकार विकसित आर्थिक सिद्धांतों का प्रयोग कर आर्थिक कर्ताओं के उपयोगिता को अधिकतम, लागतों को न्यूनतम, लाभ को अधिकतम करने तथा उत्पादन और कीमत निर्धारण विषयक निर्णयों में सहायता हो सकती है। इन उद्देश्यों की पूर्ति के लिए यहाँ आर्थिक सिद्धांतों को ज्यामितीय, अंकगणितीय तथा अवकलन एवं कलन गणित के विचारों का प्रयोग कर व्यवहारिक स्वरूप प्रदान किया जाता है। इस पाठ्यक्रम की विषय-वस्तु को भली प्रकार समझ पाने के लिए यह अपेक्षित है कि अध्येता व्यष्टि अर्थशास्त्र के एक प्रारंभिक पाठ्यक्रम में उत्तीर्ण हो चुका हो और उसे अवकलन, प्रारंभिक बीज गणित और रेखाचित्रांकन के कौशल का ज्ञान हो।

पाठ्यक्रम रचना 4 खंडों में विभाजित है। प्रत्येक खंड आगे कुछ इकाइयों में विभाजित है। खंड 1 में उत्पादन, सकल-स्तरीय दक्षता और क्षेम अर्थशास्त्र के संदर्भों में ''सामान्य संतुलन की रूपरेखा'' विषयक प्रश्नों पर चर्चा की गई है। खंड 2 तथा 3, अपूर्ण प्रतियोगिता के अंतर्गत विभिन्न प्रकार की बाज़ार संरचनाओं से संबंधित है। व्यवहारिक जीवन में हमें कीमत सिद्धांतों में कल्पित परिणाम प्रायः दिखाई नहीं पड़ते। जहाँ बाह्यताएँ उपस्थित हों वहाँ ऐसी ही बाज़ार की विफलताएँ प्रकट होती हैं। इनमें सार्वजनिक पदार्थों और/अथवा असम-मित सूचनाओं का बड़ा योगदान रहता है। अतः खंड 4 में इन सब पक्षों पर चर्चा की गई है।

पाठ्यक्रम

खंड 1 व्यापक संतुलन

इकाई 1 उत्पादन सहित व्यापक संतुलन
इकाई 2 व्यापक संतुलन और विनिमय
इकाई 3 अर्थव्यवस्था व्यापी दक्षता और क्षेम अर्थशास्त्र

खंड 2 अपूर्ण बाज़ार-I

इकाई 4 एकाधिकार

इकाई 5 एकाधिकारिक स्पर्धा (प्रतियोगिता)

खंड 3 अपूर्ण बाज़ार-II

इकाई 6 अल्पाधिकार
इकाई 7 द्यूत सिद्धांत और उसके अनुप्रयोग

खंड 4 बाज़ार की विफलता

इकाई 8 बाह्यताएं और सार्वजनिक पदार्थ
इकाई 9 असम-मित सूचनाएँ

मध्यस्तरीय समष्टि अर्थशास्त्र-II (बीईसीसी 109) 6 क्रेडिट

यह पाठ्यक्रम बीईसीसी–106 'मध्यस्तरीय समष्टि अर्थशास्त्र-I का ही आगे विकास है। इसमें अध्येताओं का परिचय आर्थिक संवृद्धि और तकनीकी प्रगति जैसे दीर्घकालिक प्रश्नों से कराया जा रहा है। यह पाठ्यक्रम बी.ई.सी.सी.–106 में प्रयुक्त विभिन्न समग्रवाची संकल्पनाओं के व्यष्टिस्तरीय आधार का निरूपण भी कर रहा है।

पाठ्यक्रम

खंड 1 आर्थिक संवृद्धि

इकाई 1 हैरड–डोमर प्रतिमान
इकाई 2 सोलो प्रतिमान
इकाई 3 अंतर्जात संवृद्धि प्रतिमान
इकाई 4 व्यवसाय चक्र

खंड 2 व्यष्टि अर्थशास्त्रीय आधार

इकाई 5 अंतर्कालिक चयन
इकाई 6 निवेश फलन
इकाई 7 मुद्रा की मांग : केन्ज उपरांत दृष्टिकोण

खंड 3 राजकोषीय एवं मौद्रिक नीतियाँ

इकाई 8 राजकोषीय नीति
इकाई 9 बजटीय संरोध और ऋण
इकाई 10 मौद्रिक नीति

खंड 4 समष्टि अर्थशास्त्रीय विचार धाराएँ

इकाई 11 समष्टि अर्थशास्त्रीय विचारों का प्रादुर्भाव-I
इकाई 12 समष्टि अर्थशास्त्रीय विचारों का प्रादुर्भाव-II

प्रारंभिक अर्थमिति (बीईसीसी 110) 6 क्रेडिट

इस पाठ्यक्रम में मूल अर्थमितिक संकल्पनाओं और तकनीकों से भली प्रकार परिचय कराया जा रहा है। इसमें साधारण और बहुचरीय प्रतीपगमन प्रतिमानों से जुड़ी अवधारणा, सत्यापन, आंकलन और जाँच विषयक सांख्यिकीय संकल्पनाएँ समाहित है।

पाठ्यक्रम

खंड 1 अर्थमितिक सिद्धांत : मूल तत्व

इकाई 1 विषय-प्रवेश
इकाई 2 सांख्यिकीय प्रविधियाँ : एक सिंहावलोकन
इकाई 3 अवधारणा सत्यापन : एक सिंहावलोकन

खंड 2 व्यष्टि अर्थशास्त्रीय आधार

इकाई 4 साधारण रैखिक प्रतीपगमन प्रतिमान : आंकलन
इकाई 5 साधारण रैखिक प्रतीपगमन प्रतिमान : निष्कर्षण
इकाई 6 साधारण द्विचरीय प्रतीपगमन प्रतिमान का विस्तार

खंड 3 बहुचर प्रतीपगमन प्रतिमान

इकाई 7 बहुचर प्रतीगमन प्रतिमान : आंकलन
इकाई 8 बहुचर प्रतीगमन प्रतिमान : निष्कर्षण
इकाई 9 बहुचर प्रतीपगमन प्रतिमान का विस्तार

खंड 4 मान्यता और निरूपण उल्लंघन के उपचार

इकाई 10 बहुरैखिकता
इकाई 11 विषमोत्सार्तता
इकाई 12 स्व-सहसंबंधन

भारतीय अर्थव्यवस्था-I (बीईसीसी 111) 6 क्रेडिट

यह पाठ्यक्रम अध्येता का भारतीय अर्थव्यवस्था के आधारभूत लक्षणों से परिचय कराएगा। अर्थव्यवस्था का एक प्रतिरूप तो स्वतंत्रता के समय विरासत में ही मिला था, उसी के साथ उपलब्ध संसाधनों एवं संरोधों के परिवेश में अर्थव्यवस्था में आए संरचनात्मक परिवर्तनों, जनांकीय अभिलक्षणों आदि पर चर्चा की गई है। भारतीय अर्थव्यवस्था के कुछ अतिमहत्त्वपूर्ण मुद्दों– गरीबी, विषमता, बेरोज़गारी, स्वस्थता एवं पोषण की अवस्था आदि पर भी यहां चर्चा की गई है। संवृद्धि एवं संरचनात्मक परिवर्तनों, व्यापार एवं भुगतान शेष तथा प्रशासन एवं संस्थागत आयामों पर एक अंतर्राष्ट्रीय तुलनात्मक परिप्रेक्ष्य भी यहां प्रस्तुत किया गया है।

पाठ्यक्रम

खंड 1 स्वतंत्र्योत्तर आर्थिक विकास

इकाई 1 स्वतंत्रता के समय अर्थव्यवस्था
इकाई 2 विकास विमर्श
इकाई 3 संरचनात्मक परिवर्तन
इकाई 4 संसाधन और संरोध

खंड 2 जनसंख्या एवं मानवीय विकास

इकाई 5 जनांकीय अभिलक्षण
इकाई 6 शिक्षा क्षेत्र
इकाई 7 स्वास्थ्य एवं पोषण

खंड 3 संवृद्धि और वितरण

इकाई 8 गरीबी
इकाई 9 विषमता
इकाई 10 रोज़गार एवं बेरोज़गारी

खंड 4 अंतर्राष्ट्रीय तुलनाएं

इकाई 11 संवृद्धि एवं संरचनात्मक परिवर्तन
इकाई 12 सामाजिक एवं आर्थिक विकास
इकाई 13 व्यापार और भुगतान शेष
इकाई 14 प्रशासन एवं संस्थाएं

विकास अर्थशास्त्र-I (बीईसीसी 112) 6 क्रेडिट

यह पाठ्यक्रम अध्येता को आर्थिक संवृद्धि और आर्थिक विकास की संकल्पनाओं से परिचित कराता है। इन दोनों संकल्पनाओं की यहां सविस्तार व्याख्या की गई है। अध्येताओं को संवृद्धि के सिद्धांतों एवं प्रतिमानों के विषय में बताया गया है और संवृद्धि के निर्धारकों का वर्णन भी किया गया है। साथ ही, इसी पाठ्यक्रम में गरीबी, विषमता तथा राजनीतिक संस्थाओं, लोकतंत्र, नियमन तथा राजकीय विफलताओं पर भी चर्चा की गई है।

पाठ्यक्रम

खंड 1 संवृद्धि और विकास

इकाई 1 संकल्पनाएं, सूचक और मापक
इकाई 2 अंतर्राष्ट्रीय तुलनाएं

खंड 2 संवृद्धि प्रतिमान : सिद्धांत एवं साक्ष्य

इकाई 3 संवृद्धि प्रतिमान : एक परिचय
इकाई 4 हैरड-डोमर प्रतिमान
इकाई 5 सोलो–प्रतिमान
इकाई 6 अन्तर्जात प्रतिमान
इकाई 7 संवृद्धि के निर्धारक

खंड 3 विषमता और गरीबी

इकाई 8 विषमता
इकाई 9 गरीबी

खंड 4 राजनीतिक संस्थाएं और सरकार की कार्यविधियाँ

इकाई 10 संस्थाएं और लोकतंत्र का विकास
इकाई 11 नियमन के सिद्धांत
इकाई 12 राजकीय विफलता और भ्रष्टाचार

भारतीय अर्थव्यवस्था-II (बीईसीसी 113) 6 क्रेडिट

पाठ्यक्रम बीईसीसी–111 में भारतीय अर्थव्यवस्था के मूल अभिलक्षणों से परिचय के बाद यहां हम आपको समष्टि अर्थनीतिक परिवेश से परिचित कराते हुए भारतीय अर्थव्यवस्था की क्षेत्रानुसार विशेषताओं की ओर

ले जा रहे हैं। पूर्ववर्ती में चार विचार हैं : (i) मौद्रिक नीति, (ii) राजकोषीय नीति, (iii) व्यापार एवं निवेश नीति, और (iv) श्रम कानून एवं नियमन। अनुवर्ती में कृषि, उद्योग और सेवा क्षेत्रों पर इसी पाठ्यक्रम में चर्चा की गई है।

पाठ्यक्रम

खंड 1 समष्टि आर्थिक नीतियां

इकाई 1 मौद्रिक नीति
इकाई 2 राजकोषीय नीति
इकाई 3 व्यापार एवं निवेश नीति
इकाई 4 श्रम कानून एवं नियमन

खंड 2 कृषि क्षेत्र

इकाई 5 कृषि क्षेत्र का निष्पादन
इकाई 6 कृषिक संबंध एवं बाज़ार से सहलग्नता
इकाई 7 पूंजी निर्माण और उत्पादिता
इकाई 8 कृषि नीति

खंड 3 औद्योगिक क्षेत्र

इकाई 9 औद्योगिक संवृद्धि और नीति
इकाई 10 लघु उद्योग

खंड 4 सेवा क्षेत्र

इकाई 11 सेवा क्षेत्र के अभिलक्षण
इकाई 12 सेवा क्षेत्र के नीति विषयक मुद्दे

विकास अर्थशास्त्र–II (बीईसीसी 114) 6 क्रेडिट

यहाँ पाठ्यक्रम बीईसीसी–112 को ओर आगे विकास दिया गया है। यहां अध्येता जनांकिकी और विकास के विषय में जानेंगे। यहां विकासशील देशों में श्रम, भूमि एवं साख के बाजारों पर भी चर्चा की गई है। आपको समुदायों एवं सामाजिक संस्थाओं की विकास में भूमिका से भी अवगत कराया जाएगा। पाठ्यक्रम का एक लक्ष्य वैश्वीकरण एवं विकास पर विषद् एवं संतुलित चर्चा करना भी है।

पाठ्यक्रम

खंड 1 : जनांकिकी और विकास

इकाई 1 : जनांकीय संकल्पनाएं
इकाई 2 : जनांकीय संक्रमण और विकास की प्रक्रिया

खंड 2 : भूमि, श्रम और साख बाजार

इकाई 3 : भूमि
इकाई 4 : श्रम
इकाई 5 : साख

खंड 3 : व्यक्ति, समुदाय और सामुदायिक उपलब्धियाँ

इकाई 6 : सामाजिक परिवेशों में वैयक्तिक व्यवहार

इकाई 7 : संगठनों और समुदायों में शासन तन्त्र
इकाई 8 : पर्यावरण एवं धारणीय विकास

खंड 4 : वैश्वीकरण और विकास

इकाई 9 : वैश्वीकरण : ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में
इकाई 10: वैश्वीकरण का अर्थशास्त्र

2. विषय विशिष्ट ऐच्छिक

स्वास्थ्य एवं शिक्षा का अर्थशास्त्र (बीईसीई 141) 6 क्रेडिट

इस ऐच्छिक पाठ्यक्रम में आपका परिचय मानवीय पूंजी एवं मानवीय विकास से कराया जाएगा। स्वास्थ्यहित लाभों और शैक्षिक उपलब्धियों पर भी यहीं चर्चा होगी। शिक्षा और स्वास्थ्य के संबंध में बाजार की विफलता के संदर्भ में सरकार की भूमिका पर भी हम चर्चा करेंगे। भारत की स्वास्थ्य नीति और शैक्षिक वित्तीय नीति की भी यहां व्याख्या की गई है।

पाठ्यक्रम

खंड 1 विषय प्रवेश

इकाई 1 : मानवीय पूंजी हेतु स्वास्थ्य और शिक्षा
इकाई 2 : मानवीय विकास में स्वास्थ्य की भूमिका

खंड 2 : स्वास्थ्य अर्थशास्त्र के आधार

इकाई 3 : स्वास्थ्य परिचार्या सेवाओं की मांग
इकाई 4: स्वास्थ्य परिचर्या सेवाओं की आपूर्ति
इकाई 5 : स्वास्थ्य हित लाभों का मापन

खंड 3 : स्वास्थ्य नीति

इकाई 6 : बाजार विफलता और सरकार की भूमिका
इकाई 7 : जन स्वास्थ्य सेवाएं

खंड 4 : भारत में स्वास्थ्य क्षेत्रक

इकाई 8 : भारत में स्वास्थ्य और चिकित्सीय सेवाओं की प्रावस्था
इकाई 9 : भारत में स्वास्थ्य नीति

खंड 5 : शिक्षा का अर्थशास्त्र

इकाई 10 : मानवीय पूंजी
इकाई 11 : शिक्षा : मांग और आपूर्ति

खंड 6 : भारत में शिक्षा क्षेत्रक

इकाई 12: शैक्षिक उपलब्धियों की प्रावस्था
इकाई 13 : राजकीय नीति और भारत में शिक्षा का वित्तीयन

व्यवहारिक अर्थमिति (बीईसीसी–142) 6 क्रेडिट

इस पाठ्यक्रम का लक्ष्य व्यवहारिक अर्थमितिक विश्लेषण का आधार तैयार करते हुए अर्थशास्त्र में आंकड़ों पर आधारित शोध हेतु आपको उचित कौशल से संयुक्त करना है। यहां आग्रह प्रविधियों के प्रयोग पर है– इसीलिए अर्थमितिक सॉफ्टवेयर और कंप्यूटर पर कार्य करने की क्षमता का विकास भी इस पाठ्यक्रम का अंग है।

पाठ्यक्रम

खण्ड 1 : अर्थमितिक शोध में आंकड़ों विषयक प्रश्न

इकाई 1 : आंकड़ा आधारित शोध के सोपान
इकाई 2 : निरूपण विषयक प्रश्न
इकाई 3 : प्रतिमान चयन की कसौटियाँ

खंड 2 : प्रतीपगमन विश्लेषण : कुछ उच्चस्तरीय विषय

इकाई 4 : विलम्बित अन्तराल प्रतिमान
इकाई 5 : स्वसमाश्रयी प्रतिमान
इकाई 6: युगपत समीकरण प्रतिमान–**I**
इकाई 7: युगपत समीकरण प्रतिमान– **II**

खंड 3 : समस्तरीय/समसोपानिक (पैनल) आंकड़े प्रतिमान

इकाई 8 : समस्तरीय आंकड़े : एक परिचय
इकाई 9 : समस्तरीय आंकड़े प्रतिमानों का आंकलन

खंड 4 : अर्थमितिक सॉफ्टवेयर : एक परिचय

(अपेक्षा की जाती है कि अध्येता इसमें से एक सॉफ्टवेयर का प्रयोग अवश्य सीख लेगा)

इकाई 10 : ग्रेटल **(GRETL)** : एक परिचय
इकाई 11 : ई-व्यूज़ **(E-VIEWS)** : एक परिचय
इकाई 12 : स्टेटा **(STATA)** : एक परिचय

पर्यावरणीय अर्थशास्त्र (बीईसीई–143) 6 क्रेडिट

व्यष्टि आर्थिक एवं क्षेम आर्थिक संकल्पनाओं की समीक्षा करते हुए ये ऐच्छिक पाठ्यक्रम पर्यावरण के संदर्भ में बाजार की विफलता और संपदा अधिकारों पर चर्चा करेगा। पर्या मुद्दों के लिए दो विधियां सुझाई जाती हैः निर्देश एवं नियंत्रण विधि और बाजार आधारित उपस्कर। इनकी यहां व्याख्या की गई है। सीमापारिक पर्या समस्याओं और व्यापार से जुड़े पर्यावरणीय आयामों पर भी हम चर्चा कर रहे हैं। यहाँ पर चर्चित अन्य मुख्य विचार हैं

(i) हरित लेखांकन, (ii) धारणीयता, और (iii) पर्यावरण का मूल्यांकन,

खण्ड 1 : विषय प्रवेश

इकाई 1 : अर्थव्यवस्था और पर्यावरण
इकाई 2 : व्यष्टि अर्थशास्त्र और क्षेम अर्थशास्त्र : एक समीक्षा

खंड 2 : बाहयताओं का सिद्धांत

इकाई 3 : बाजार की विफलता
इकाई 4 : संपदा अधिकार और कोज प्रमेय

खंड 3 : पर्यावरण नीति

इकाई 5 : निर्देश एवं नियंत्रण विधि
इकाई 6 : बाजार आधारित उपस्कर
इकाई 7 : पर्यावरण नीति लागू करना

खंड 4 : अंतर्राष्ट्रीय पर्या समस्याएँ

इकाई 8 : सीमापारिक पर्या समस्याएँ
इकाई 9 : व्यापार और पर्यावरण

खंड 5 : पर्यावरण का मूल्यांकन

इकाई 10 : पर्यावरणीय सेवाओं का आर्थिक मूल्य
इकाई 11 : पर्या सेवाओं का गैर-बाज़ार मूल्यांकन
इकाई 12 : हरित लेखांकन

खंड 6 : धारणीय विकास

इकाई 13 : धारणीय विकास
इकाई 14 : संवृद्धि और पर्यावरण

वित्तीय अर्थशास्त्र विषय विशिष्ट ऐच्छिक (बीईसीई 144) 6 क्रेडिट

इस विषय विशिष्ट ऐच्छिक पाठ्यक्रम में अध्येताओं का परिचय वित्तीय उपस्करों, संस्थाओं और बाजारों से कराया जाएगा। यहां वित्त के अध्ययन में आवश्यक सांख्यिकीय उपस्करों और कंप्यूटर के स्प्रैडशीट सॉफ्टवेयर से भी परिचय कराया जाएगा। पाठ्यक्रम में इन विषयों पर चर्चा की गई हैः निश्चयात्मक ओर यादृच्छिक नकद प्रवाह, परिसंपद कीमत निर्धारतण [व्युत्पन्न परिसंपदा कीमत निर्धारण सहित] यहीं अध्येता निगम वित्त एवं निगम वित्तीय नीतियों के विषय में भी जानकारी पाएंगे

खंड 1 : वित्तीय उपस्कर, बाजार और संस्थाएं

इकाई 1 : वित्तीय बाजार
इकाई 2 : वित्तीय संस्थाएं
इकाई 3 : वित्तीय उपस्कर

खंड 2: प्रारंभिक सांख्यिकी और स्प्रैडशीट

इकाई 4: प्रारंभिक सांख्यिकीय विधियां
इकाई 5 : प्रारंभिक स्प्रैडशीट

खंड 3 : निश्चयात्मक नकद प्रवाह

इकाई 6 : ब्याज का मूल सिद्धांत
इकाई 7 : स्थिर आय प्रतिभूतियां

खंड 4: एकल अवधि यादृच्छिक नकद प्रवाह

इकाई 8: जोखिम और अनिश्चितता
इकाई 9 : यादृच्छिक परिसंपत्तियां
इकाई 10: परिसंपदा संचय औसत एवं विचरण विश्लेषण

खंड 5: परि संपदा कीमत निर्धारण

इकाई 11: मार्कोविट्ज प्रतिमान
इकाई 12: पूंजी परिसंपदा कीमत निर्धारण प्रतिमान

खंड 6: भावी सौदों, विकल्पों और अन्य व्युत्पन्न परिसंपदाओं का कीमत निर्धारण

इकाई 13: अग्रिम सौद और भावी सौदे
इकाई 14: विकल्प विनिमय और अन्य व्युत्पन्न परिसंपदाएं,

खंड 7: निगम वित्त एवं निगम नीति

इकाई 15: निगम वित्त के प्रारूप
इकाई 16: निगम नीति

3 योग्यता/कौशल संवर्धक पाठ्यक्रम

बीईवीएई 181 : पर्यावरण अध्ययन

सौर मंडल में एकमात्र जीवन धारक ग्रह पृथ्वी है। यद्यपि पृथ्वी का वितान तो बहुत विशाल है, किंतु इसकी जैवमंडल नामक बहुत पतली-सी सतह में ही जीवन धारित होता है। विभिन्न जीवन स्वरूपों के बीच निरंतर अनुक्रिया हेतु ऊर्जा का एकमेव स्रोत सूर्य है। दीर्घकाल से मानव एवं प्रकृति के बीच एक सहजीविता का संबंध चला आ रहा है। किंतु अतिशय मानवीय हस्तक्षेपों और उसके अ-धारणीय व्यवहार के कारण अब लाखों लोगों के जीवन, आजीविका एवं अन्य जीवधारियों के प्राण अब संकट में हैं। अब ये पर्यावरणीय प्रश्न सांझी समस्या बन गए हैं और पृथ्वी पर जीवित प्रत्येक व्यक्ति का दायित्व है कि सम्यक व्यवहार करते हुए इनके नकारात्मक प्रभावों के निराकरण का प्रयास करें। अतः अब सभी पणधारियों के बीच अधिकाधिक जागरूकता का प्रसार करना आवश्यक हो गया है। इसी बात का ध्यान रखते हुए सभी स्नातक स्तरीय अध्येताओं के लिए एक पर्यावरण अध्ययन पाठ्यक्रम अनिवार्य किया गया है।

खण्ड 1 : पर्यावरण एवं पर्यावरणीय प्रश्न – एक परिचय

इकाई 1 : हमारा पर्यावरण
इकाई 2 : पारिस्थितिकी तंत्र
इकाई 3 : प्रमुख पारिस्थितिकी तंत्र

खंड 2 : प्राकृतिक संसाधन

इकाई 4 : भूमि एवं जल
इकाई 5 : वन संसाधन
इकाई 6: जैव विविधता : मूल्य एवं सेवाएँ
इकाई 7: ऊर्जा संसाधन

खंड 3 : पर्यावरणीय प्रश्न और सरोकार

इकाई 8 : जैव विविधता : संकट एवं संरक्षण
इकाई 9 : पर्या-प्रदूषण और जोखिम
इकाई 10 : अपशिष्ट प्रबंधन
इकाई 11 : वैश्विक पर्यावरण प्रश्न

खंड 4 : हमारे पर्यावरण की रक्षा : नीतियाँ एवं व्यवहार

इकाई 12 : पर्यावरण विषयक विधेयन

इकाई 13 : मानव समुदाय एवं पर्यावरण
इकाई 14 पर्यावरणीय नीतिशास्त्र

शिक्षक मूल्यांकित शैक्षिक कार्य : क्षेत्र कार्य आधारित रिपोर्ट : 5 घंटे

- किसी क्षेत्र का भ्रमण कर पर्या संसाधनों को कलमबंद करना : नदियाँ/वन/पुष्पी पादप/वन्य जीव आदि।
- किसी स्थानीय प्रदूषित क्षेत्र का निरीक्षण : शहरी/ग्रामीण/औद्योगिक/कृषिक
- सामान्यतः पाए जाने वाले पौधों, कीटों-पक्षियों और उनकी पहचान के आधारभूत नियमों का अध्ययन
- सरल पारिस्थितिकी तंत्रों का अध्ययन : तालाब, सरिता, दिल्ली की पहाड़ियाँ आदि।

बीईजीएई 182 : हिंदी भाषा और संप्रेषण 4 क्रेडिट

इस पाठ्यक्रम में हिंदी भाषा और संप्रेषण से संबंधित बिंदुओं का अध्ययन कराया जाएगा। यह पाठ्यक्रम 4 क्रेडिट का है। इस पाठ्यक्रम में हिंदी भाषा और संप्रेषण से संबंधित निम्नलिखित बिंदुओं को शामिल किया गया है :

हिंदी भाषा का विकास, भाषा की परिभाषा, प्रकृति एवं विविध रूप' हिंदी भाषा की विशेषताएँ : क्रिया, विभक्ति, सर्वनाम, विशेषण एवं अव्यय संबंधी। हिंदी की वर्ण-व्यवस्था : स्वर एवं व्यंजन। स्वर के प्रकार-ह्रस्व, दीर्घ और संयुक्त। व्यंजन के प्रकार–स्पर्श, अंतस्थ, ऊष्म, अल्पप्राण, महाप्राण, घोष और अघोष। वर्गों का उच्चारण स्थान : कण्ठ्य, तालव्य, मूर्द्धन्य, दन्त्य, ओष्ठ्य तथा दन्तोष्ठ्य। बलाघात, संगम, अनुतान तथा संधि। भाषा संप्रेषण के चरण : श्रवण, अभिव्यक्ति, वाचन तथा लेखन। हिंदी वाक्य रचना, वाक्य और उपवाक्य। वाक्य भेद। वाक्य का रूपांतर।

बीपीसीएस 185 : भावनात्मक सामर्थ्य का विकास 4 क्रेडिट

यह एक कौशल संवर्धन पाठ्यक्रम है और तीसरे सेमेस्टर में पढ़ाया जाना है। यह पाठ्यक्रम आपका परिचय भावनाओं से कराएगा और भावनात्मक सूझबूझ तथा भावनात्मक सामर्थ्य में संबंधों पर विशेष आग्रह करेगा। साथ ही, यह अध्येता को भावनात्मक सामर्थ्य विकास हेतु विभिन्न युक्तियों को जानने एवं अधिकृत करने में सहायता करेगा।

बीईसीएस 184 : आंकड़ों (तथ्यों) का विश्लेषण 4 क्रेडिट

आज के सूचना युगीन समाज में देश के सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक विकास की एक प्रमुख प्रचालक शक्ति का रूप सूचनाओं में धारण कर लिया है। ये सूचनाएँ सृजित कर अनेक दृश्य स्वरूपों में निरूपित कर अन्य स्वरूपों से समन्वित करने के पश्चात् आर्थिक एवं निर्णयन संबंधी कार्यों में प्रयोग की जाती हैं।

सूचना सृजन का एक मुख्य घटक आंकड़े हैं। ये आंकड़े सूचनाओं के ही अपरिष्कृत रूप हैं – जिन्हें एकत्र, स्वच्छ और प्रसंस्कृत किया जाता है। इसीलिए इन आंकड़ों को विश्लेषित-परिवर्तित कर तालिकाओं एवं रेखाचित्रों के सरल रूप में प्रस्तुत किया जाता है ताकि इनका अधिक सार्थक रूप में प्रयोग किया जा सके। आंकड़े एकत्र, प्रस्तुत एवं विश्लेषित करने के लिए स्प्रैडशीट पैकेजों का प्रयोग करने की तकनीकों की आजकल अर्थव्यवस्था के प्रायः सभी क्षेत्रों में बहुत मांग है। वर्तमान कौशल संवर्धन पाठयक्रम आपको आंकड़ों के संकलन, प्रस्तुति एवं विश्लेषण के उपस्करों एवं तकनीकों से एक्सेल (Excel) स्प्रैडशीट पैकेज

के माध्यम से अवगत कराएगा। इससे आपकी रोज़गार पाने की क्षमता में सुधार होगा। पाठ्यक्रम के चार खंड हैं।

पाठ्यक्रम

खंड 1 : गणितीय एवं सांख्यिकीय प्रविधियां : एक सिंहावलोकन

इकाई 1 : गणितीय संकल्पनाएं
इकाई 2: सांख्यिकीय संकल्पनाएं
इकाई 3: सांख्यिकीय सॉफ्टवेयर : एक परिचय

खंड 2 : आंकड़े : एकत्र करना और उनकी प्रस्तुति

इकाई 4: आंकड़े एकत्र करना : विधियां और स्रोत
इकाई 5: आंकड़े एकत्र करने के उपस्कर
इकाई 6: आंकड़ों की प्रस्तुति

खंड 3: परिणात्मक आंकड़ों का विश्लेषण

इकाई 7 : एकल चर आंकड़ों का विश्लेषण
इकाई 8: द्वि-चर आंकड़ों का विश्लेषण
इकाई 9: बहुचर आंकड़ों का विश्लेषण

खंड 4: संयुक्त सूचकांक एवं गुणात्मक आंकड़ों का विश्लेषण

इकाई 10: संयुक्त सूचकांक
इकाई 11: गुणात्मक आंकड़ों का विश्लेषण

4. अविशिष्ट ऐच्छिक विषय

बीएसओजी 171 : भारतीय समाज : बिंब एवं वास्तविकताएँ **6 क्रेडिट**

यह पाठ्यक्रम भारतीय समाज का एक बहु विधायी परिचय देता है।

पाठ्यक्रम

खंड 1 : भारत : संकल्पनाएं

इकाई 1 : सभ्यता एवं संस्कृति
इकाई 2: भारत एक उपनिवेश के रूप में
इकाई 3: राष्ट्र, राज्य और समाज

खंड 2 : संस्थाएँ एवं प्रक्रियाएं

इकाई 4: ग्राम्य भारत
इकाई 5: नागर भारत
इकाई 6: भाषा, धर्म एवं प्रत्याख्यान
इकाई 7 : जाति एवं वर्ग
इकाई 8 : जनजाति एवं प्रजातीयता
इकाई 9 : परिवार एवं विवाह
इकाई 10 : बंधुता

खंड 3 : समालोचनाएं

इकाई 11: वर्ग, सत्ता और विषमता
इकाई 12: प्रतिरोध

बीपीएजी 172 : प्रशासन : मुद्दे एवं चुनौतियाँ 6 क्रेडिट

प्रशासन : मुद्दे एवं चुनौतियां विषयक यह प्रशासन पाठ्यक्रम विषयक संकल्पनाओं, इनके विभिन्न उद्दीप्यमान आयामों से जुड़ा है और विभिन्न समकालिक विमर्शों से आपको परिचित कराएगा। यहां अध्येता का परिचय वैश्वीकरण, सरकार, राज्य, बाज़ार, सम्य समाज और प्रशासन जैसी संकल्पनाओं से कराया जाएगा।

यहाँ भारत में प्रशासकीय रूपरेखा एवं उसके पणधारियों की भूमिका के संकल्पनात्मक आयामों की समीक्षा की जा रही है। विकास से लोकतंत्र को सुदृढ़ करने के विभिन्न पक्षों का विश्लेषण किया जा रहा है। आज के समय में प्रशासन का वितान, नौकरशाही की बदलती भूमिका, सूचना एवं संप्रेषण प्रौद्योगिकी, मीडिया के प्रभाव, पारदर्शिता और उत्तरदेयता, धारणीय मानव विकास, निगम प्रशासन आदि पर नवीन संदर्शों के साथ विकसित एवं विस्तृत हो रहा है। ये सभी विषय इस पाठ्यक्रम का अंग हैं।

स्थानीय प्रशासन के महत्त्वपूर्ण आयामों और भागीदारी पूर्ण शासन पर भी यहां चर्चा की गई है। भारत में श्रेष्ठ प्रशासन विषयक पहलों के माध्यम से इस पाठ्यक्रम में प्रशासन के सत्व का अनुसंधान करने का प्रयास किया गया है।

पाठ्यक्रम

खंड 1 : सरकार एवं प्रशासन : संकल्पनाएं

इकाई 1 : वैश्वीकरण : सरकार, बाज़ार और सभ्य समाज की भूमिकाएं
इकाई 2: प्रशासन : संकल्पनात्मक आयाम
इकाई 3: भारत में प्रशासन की रूपरेखा
इकाई 4 : प्रशासन के पणधारी

खंड 2 : प्रशासन एवं विकास

इकाई 5: विकास के बदलते हुए आयाम
इकाई 6: प्रशासन द्वारा लोकतंत्र का सुदृढ़ीकरण

खंड 3 : प्रशासन : उदीप्यमान संदर्श

इकाई 7 : प्रशासन की चुनौतियां एवं नौकरशाही की बदलती हुई भूमिका
इकाई 8 : सूचना एवं संप्रेषण प्रौद्योगिकी तथा प्रशासन
इकाई 9 : मीडिया की भूमिका
इकाई 10 : निगम प्रशासन
इकाई 11 : धारणीय मानव विकास
इकाई 12 : पारदर्शिता एवं उत्तरदेयता

खंड 4 : स्थानीय प्रशासन

इकाई 13: विकेंद्रीकरण और स्थानीय प्रशासन
इकाई 14 समाहनकारी एवं भागीदारीपूर्ण प्रशासन

खंड 5 : भारत में सुशासन की पहलें

इकाई 15 लोक सेवा गारंटी अधिनियम, नागरिक अधिपत्र, सूचना का अधिकार, निगम सामाजिक दायित्व

बीपीएजी 173 : ई-प्रशासन 6 क्रेडिट

यह पाठ्यक्रम लोक प्रशासन संगठनों में ई-प्रशासन की संकल्पनागत रूपरेखा से संबंधित है। संकल्पना, प्रतिमान, भूमिका एवं महत्त्व, ICT-घटकों एवं अनुप्रयोगों तथा सूचना प्रणालियों पर प्रकाश डालते हुए यह पाठ्यक्रम ग्रामीण विकास, नगर विकास, ई-अध्ययन, ई-वाणिज्य तथा ई-स्वास्थ्य प्रणालियों के सभी महत्त्वपूर्ण संभागों एवं क्षेत्रों को ही अपने कलेवर में समेट लेता है। साथ ही यहां ई-प्रशासन के प्रभावी क्रियान्वयन के कुछ उपायों पर भी विचार किया गया है।

पाठ्यक्रम

खंड 1 : ई-प्रशासन : एक संकल्पनात्मक रूपरेखा

इकाई 1 : संकल्पना, प्रतिमान, भूमिकाएं एवं महत्त्व
इकाई 2: ICT-घटक एवं अनुप्रयोग
इकाई 3: सूचना प्रणालियाँ

खंड 2 : प्रशासन में ICT की भूमिका

इकाई 4 : प्रशासनिक संस्कृति का प्रत्यावर्तन
इकाई 5: ई-प्रशासन : सरकार के विभागों/संस्थानों/एजेंसियों में

खंड 3 : स्थानीय प्रशासन में ICT की भूमिका

इकाई 6 : ई-ग्रामीण विकास
इकाई 7 : ई-नागर विकास
इकाई 8 : ई-अध्ययन
इकाई 9 : ई-वाणिज्य
इकाई 10 : ई-स्वास्थ्य

खंड 4 : ई-प्रशासन के प्रभावी क्रियान्वयन हेतु उपाय

इकाई 11: प्रभावी ई-प्रशासन : चुनौतियाँ एवं उपाय

बीपीएजी 174 : धारणीय विकास 6 क्रेडिट

इस पाठ्यक्रम में विकास और पर्यावरण के बीच संतुलन बनाए रखने की चुनौतियों पर विचार किया गया है। इसका मुख्य लक्ष्य धारणीय विकास के अर्थ, स्वरूप और वितान को रेखांकित करते हुए उसके मुख्य घटकों की व्याख्या करना है। यहां इस बात पर आग्रह किया गया है कि यदि आपकी भावी पीढ़ियों के लिए क्या छोड़ा जा रहा है, इस प्रश्न पर ध्यान नहीं दिया गया तो विकास करना संभव नहीं होगा। यहां धारणीय विकास के लक्ष्यों की समीक्षा करते हुए वैश्विक सांझा संपदाओं की भूमिका और जलवायु, परिवर्तनों पर भी चर्चा की गई है। पाठ्यक्रम का एक विशिष्ट अभिलक्षण धारणीय विकास एवं विकास के लक्ष्यों के बीच संबंधों तथा वैकल्पिक संसाधन सृजन तथा क्षमता संवर्धन की विभिन्न विधियों पर केंद्रित है।

पाठ्यक्रम

खंड 1 : धारणीय, विकास की संकल्पना

इकाई 1 : धारणीय विकास : अर्थ, स्वरूप और वितान
इकाई 2: धारणीय विकास : मुख्य घटक
इकाई 3: धारणीय विकास के प्रति दृष्टिकोण

इकाई 4 : धारणीय विकास के लक्ष्य

खंड 2 : विकास, धारणीयता एवं जलवायु परिवर्तन

इकाई 5: वैश्विक सांझा संपदाओं की संकल्पना और जलवायु परिवर्तन
इकाई 6: धारणीय विकास पर अंतर्राष्ट्रीय संधियाँ
इकाई 7 : विकास, धारणीयता और जलवायु परिवर्तन के अंतर्संबंध : दायित्वों में भिन्नता हेतु तर्क

खंड 3 : स्वास्थ्य, शिक्षा एवं खाद्य सुरक्षा

इकाई 8 : धारणीय विकास और खाद्य-सुरक्षा के अंतर्संबंध
इकाई 9 : स्वास्थ्य, स्वच्छता और खाद्य सुरक्षा के संदर्भ में हरित एवं अभिसृजितपूर्ण प्रौद्योगिकीयों की भूमिका
इकाई 10 : धारणीय विकास में शिक्षा की भूमिका

खंड 4 : धारणीय विकास : आगे का रास्ता

इकाई 11: धारणीय विकास में नीति नवप्रवर्तन की भूमिका
इकाई 12: समता एवं न्याय की पारिस्थितिकीय सीमाओं को समझना
इकाई 13 : संसाधन सृजन और क्षमता संवर्धन की वैकल्पिक विधियाँ

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY